

❀ ओ३म् ❀

भारत में मूर्तिपूजा



लेखक :—

‘पूर्व-जन्म-स्मृति : (एक आध्यात्मिक विवेचन’,)

‘भारतीय संस्कृति के तीन प्रतीक’ ‘हरिनाम

संकीर्तन’ ‘ब्राह्मण और मूर्तिपूजा’ आदि

अनेक उपयोगी ग्रन्थों एवं दृक्कों के

यशस्वी प्रणेता—विद्वद्वर

श्री प० राजेन्द्रजी

अतरौली



प्रकाशक—

श्रीमद् दर्शनानन्द ग्रन्थागार

कृष्णगङ्गा, मथुरा.

प्रथमवार

१०००

विक्रमाब्द २०१४

शकाब्द १८७६

मूल्य अजितद

सजितद

प्रकाशक :

श्रीमद् दर्शनानन्द ग्रन्थागारं

कृष्णगङ्गा, मथुरा

मुद्रक :

गीता आश्रम प्रिंटिङ्ग प्रेस,

गऊघाट, मथुरा ।

प्रकाशक :

श्रीमद् दर्शनानन्द ग्रन्थागार

कृष्णगङ्गा, मथुरा

मुद्रक :

गीता आश्रम प्रिंटिङ्ग प्रेस,

गऊघाट, मथुरा ।

प्रेमोपहार

★

1

1

1

1

1

1

1

1

प्रकाशक :

श्रीमद् दर्शनानन्द ग्रन्थागारं

कृष्णगङ्गा, मथुरा

मुद्रक :

गीता आश्रम प्रिंटिङ्ग प्रेस,

गऊघाट, मथुरा ।

प्रकाशक :

श्रीमद् दर्शनानन्द ग्रन्थागार

कृष्णगङ्गा, मथुरा

मुद्रक :

गीता आश्रम प्रिंटिङ्ग प्रेस,

गऊघाट, मथुरा ।

प्रकाशक :

श्रीमद् दर्शनानन्द ग्रन्थागार

कृष्णगङ्गा, मथुरा

मुद्रक :

गीता आश्रम प्रिंटिङ्ग प्रेस,

गऊघाट, मथुरा ।

उसे रंगते हैं। फिर देवों की चाँदी सोने की मूर्तियाँ बनाकर चाँदी सोने और काँच से आभूषित करके कामदार रेशमी चन्दुए के नीचे बैठते हैं। रथ के चारों कोनों पर वे तारु बनाते हैं और उनमें बुद्ध की बैठी मूर्तियाँ जिनकी सेवा में एक बोधिसत्व खड़ा रहता है, बनाते हैं। ऐसे ऐसे बीस रथ बनाये जाते हैं। इस यात्रा के दिन बहुत से गृहस्थ और सन्यासी एकत्रित होते हैं। जब वह फूल और धूप चढ़ाते हैं तो बाजा बजता है और खेल होता है। भ्रमण लोग पूजा को आते हैं। तब बौद्ध एक एक करके नगर में प्रवेश करते हैं। और वहाँ वे ठहरते हैं। तब रात भर रोशनी करते हैं। गाना और खेल होता है। पूजा होती है इत्यादि इत्यादि।”

यहाँ से इसने राजगृही, गया, काशी, कौशाम्बी और चंपा जो पूर्वी विहार की राजधानी थी, की यात्रा की। परन्तु उसने इन तीर्थों में एक भी हिन्दुओं का मन्दिर नहीं देखा। सब जगह बौद्धों के संघाराम ही देखे। ताम्रपल्ली में भी उसने २४ संघाराम देखे। अन्त में वह जहाज द्वारा सिंहल को चला गया।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि फाहियान की यात्रा के समय बौद्धों में भी सर्वत्र मूर्तिपूजा का प्रचार नहीं हुआ था। हिन्दुओं के अनेकानेक वर्तमान देवी देवताओं की मूर्तियों और उनके मन्दिरों की तो अभी सृष्टि भी नहीं हुई थी। इस प्रकार फाहियान का यात्रा काल निर्विवाद रूप से मूर्तिपूजा का प्रारम्भिक युग कहा जा सकता है।

फाहियान के लगभग दोसौ वर्ष के पश्चात् हेनसाँग एक दूसरा चीनी यात्री भारतवर्ष में आया। वह फरगन, समरकंद, बुखारा और बलख होता हुआ, इस देश में आया। यह यात्री सन् ६४० ई० में भारत में था।

प्रकाशक :

श्रीमद् दर्शनानन्द ग्रन्थागार

कृष्णगङ्गा, मथुरा

मुद्रक :

गीता आश्रम प्रिंटिङ्ग प्रेस,

गऊघाट, मथुरा ।

प्रकाशक :

श्रीमद् दर्शनानन्द ग्रन्थागार

कृष्णगङ्गा, मथुरा

मुद्रक :

गीता आश्रम प्रिंटिङ्ग प्रेस,

गऊघाट, मथुरा ।

कंधे पर रखकर पश्चिमी बुज पर ले जाता था और उसे रेशमी वस्त्र और रत्न जड़ित भूषण पहनाता था। फिर भोजन और शास्त्र चर्चा होती थी।

हेनसांग ने अयोध्या में भी बौद्धों के १० संघाराम और ३००० भिक्षु और बहुत से हिन्दुओं को देखा। प्रयाग में उसने हिन्दुओं का प्राबल्य देखा और गंगा यमुना के संगम पर सैकड़ों मनुष्यों को स्वर्गलाभ की लालसा में मरते देखा। उसका कहना है कि नदी के बीच में एक ऊंचा स्तम्भ था जिस पर चढ़ कर लोग अस्त होते हुए सूर्यका दर्शन करते थे। श्रावस्ती, कौशांबी और काशी में भी उसने हिन्दुओं का प्रभुत्व पाया। काशी में उसने ३० संघाराम, ३००० भिक्षुओं और १०० देव मन्दिर तथा १० हजार पुजारी देखे थे। यहाँ पर केवल महेश्वर की पूजा प्रचलित थी। महेश्वर की एक ताबे की १०० फीट ऊंची मूर्ति थी। वह इतनी गम्भीर और तेजपूर्ण थी कि जीवित सी जान पड़ती थी। वहाँ उसने एक मनुष्याकार बुद्ध की मूर्ति भी देखी थी।

वैशाली में उसने बौद्ध संघारामों को खडहरावस्थामें पाया। वहाँ बहुत से देवमन्दिर बन चुके थे। मगध में ५० संघाराम और दस हजार भिक्षुओं को देखा था। यहाँ हिन्दुओं के भी दस मन्दिर थे। पाटलीपुत्र इस समय उजाड़ हो चुका था। गया में उसने ब्राह्मणों के कई हजार घर देखे। गया के बोधिवृक्ष और विहार की अपूर्व शोभा इस यात्री ने देखी थी। वह लिखता है:—

“यह १६० या १७० फीट ऊंचा है और बहुत सुन्दर वेल वृक्षों का काम इस पर हुआ है। कहीं तो मोतियों से गुथी हुई मूर्तियाँ बनी हैं—कहीं ऋषियों या देवताओं की मूर्तियाँ हैं।

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । आंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । आंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

(५) मनुष्यकरं वा वृक्षे रक्षोमयं रूपयित्वा सिद्धव्यञ्जनाः पौरजानपदाना हिरण्येन प्रतिकुर्युः ॥४८॥

(६)सुरङ्गायुक्ते वाकूपे नाममनियतशिरस्कं हिरण्योपहारेण दर्शयेत् नागप्रतिमायामन्तश्छिद्रायाम् ॥४९॥

(७) चैत्यछिद्रे वल्मीकछिद्रे वा सर्प दर्शनमाहारेण प्रति-
बन्धसङ्गं कृत्वा श्रद्धधानाना दर्शयेत् ॥५०॥

(८) अश्रद्धधानानामाचमनप्रोक्षणेण रसमुपचाय्य देवता-
भिर्शार्पं ब्रूयात् ॥५१॥

अर्थ—(१) किसी भी पाखण्ड से संव का धन या देवधन जिसे श्रोत्रिय न भोगते हों कृत्यकार (उस्ताद) लोग यह कह कर कोप में पहुँचा दें कि हमने वह धन किसी ऐसे के यहा रखा था जो मर गया अथवा जल गया ।

(२) देवों के अध्यक्ष की भाति अपने कोप को बढ़ाए उसी प्रकार अपहरण करे ।

(३) रात्रि में उठकर कहीं पर देवमन्दिर या सिद्ध स्थान या कोई अद्भुत घटना खड़ी करके वहाँ यात्रा और समाज लगवा देवे और उनसे वन कमावे ।

(४) यदि चैत्य वा वृक्ष में असमय फूल फल आवें तो देवता का आ जाना प्रसिद्ध करे ।

(५) वृक्ष में किसी मनुष्य को छिपाकर, उसके द्वारा राक्षस का भय दिखला कर सिद्ध का स्वांग बनाये और पुर और देश वासियों के स्वरण से उसका प्रतिकार करावे ।

(६—७) सोना भेंट चढ़ाने पर सुरङ्ग वाले कुए में नाग दिखलावें जिसका सिर बंधा रहे । श्रद्धालुओं को छिद्र युक्त नाग की प्रतिमा में या मन्दिर या वल्मीक के छेद में नाग का प्रत्यक्ष दर्शन करावे पहिले नाग को कुछ खिला कर सुस्त बना देवे ।

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमेलक फल है। इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है। जिसे लंका के राजा ने बनवाया है। उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं। इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं। इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है। बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं। वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था। यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी। मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे। यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था। यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे। कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये। उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे। पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था। परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे। बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे। पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है। कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे। यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था। अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमेलक फल है। इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है। जिसे लंका के राजा ने बनवाया है। उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं। इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं। इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है। बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं। वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था। यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी। मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे। यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था। यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे। कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये। उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे। पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था। परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे। बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे। पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है। कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे। यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था। अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमेलक फल है। इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है। जिसे लंका के राजा ने बनवाया है। उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं। इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं। इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है। बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं। वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था। यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी। मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे। यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था। यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे। कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये। उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे। पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था। परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे। बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे। पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है। कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे। यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था। आंध्र

व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः । यजु० ४० । ८ ॥

अर्थ—वह ईश्वर सर्वव्यापक है । जगदुत्पादक, शरीर रहित शारीरिक विकाररहित, नाड़ी और नस के बंधन से रहित पवित्र, पाप से रहित, सूक्ष्म-दर्शी, क्षानी, सर्वोपरि वर्तमान, स्वयंसिद्ध, अनादि प्रजा के लिए ठीक ठीक कर्मफल का विधान करता है ।

इस वेद मंत्र में परमात्मा को 'शरीररहित' शारीरिक विकार रहित एवं 'नाड़ी, नस के बंधन से रहित' बताकर उसके साकारत्व का अत्यन्त निषेध किया है ।

वेदों में अनेक स्थलों पर परमात्मा का रूपक अलङ्कार द्वारा 'विश्वरूप' में वर्णन किया गया है । उसे देख कर लोग वेदों में ईश्वर का साकारत्व सिद्ध करने का असफल प्रयत्न किया करते हैं । ऐसे कुछ मंत्र नीचे उद्धृत किये जाते हैं—

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।

सभूमि १ सर्वतस्पृत्वात्यतिष्ठदशाङ्गुलम् ॥ यजु० ३१ । १॥

अर्थ—सब प्राणियों के हजारों शिर, हजारों नेत्र, असंख्य पाद जिसके बीच में हैं, ऐसा यह परमात्मा भूगोल में सब ओर से व्याप्त होकर, पांच स्थूल, पाँच सूक्ष्म भूत जिसके अवयव हैं उस सब जगत् को लाँघ कर स्थित है अर्थात् सब में और सब से प्रथक है ।

इस मन्त्र में परमात्मा को 'सहस्रशीर्ष', 'सहस्राक्ष' और 'सहस्रपात्' अर्थात् हजारों शिर, हजारों आँख और हजारों पैर वाला अलंकार रूप से वर्णन किया गया है । सायण, महीवर, उदयन सभी भाष्यकारों ने इस मन्त्र का वही अर्थ किया है जो यहाँ ऊपर दिया गया है । सब प्राणियों के शिर, आँख, पग

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमेलक फल है। इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है। जिसे लंका के राजा ने बनवाया है। उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं। इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं। इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है। बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं। वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था। यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी। मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे। यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था। यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे। कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये। उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे। पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था। परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे। बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे। पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है। कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे। यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था। आंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमेलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमेलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अर्ध

मनुस्मृति—जो मानव धर्म शास्त्र के नाम से सुप्रसिद्ध है आर्य जाति की एक अमूल्य निधि है। भगवान् मनुने जिन वैयक्तिक सामाजिक, राजनैतिक कर्तव्याकर्तव्य कर्मों का सार्वभौमिक रूप में इस ग्रन्थ में उपदेश दिया है, वे आज भी मनुष्य समाज के पथ प्रदर्शन की क्षमता रखते हैं। मनुस्मृति के आरम्भ में ही सृष्टि-उत्पत्ति-विषय पर विचार करते हुए ईश्वर के स्वरूप का सक्षिप्त वर्णन किया गया है। यहाँ पर भी परमात्मा को अचिन्त्य अप्रमेय, अनादि, इन्द्रियातीत, परमसूक्ष्म, आकाररहित आदि उपलक्षणों वाला बताया गया है।

त्वमेको ह्यस्य सर्वस्य निधानस्य स्वयंभुवः । अचिन्त्यस्याप्रमेयस्य कार्यं तत्त्वार्थं वित्प्रभो ॥ ३ ॥ अ० १ ।

क्योंकि सम्पूर्ण वेद के कार्य के यथार्थ प्रयोजन के जानने वाले आप (मनु) एक ही हैं। जो वेद कि अचिन्त्य, अप्रमेय अनादि परमात्मा का विधान है ॥ ३ ॥

ततः स्वयंभूर्भगवान् व्यक्तो व्यञ्जयन्निदम् । महा भूतादिवृत्तौजा प्रादुरासीत्तमोनुदः ॥ ६ ॥ योसाऽवतौन्द्रियग्राह्यः सूक्ष्मोऽव्यक्तः सनातनः सर्वभूतमयोऽचिन्त्यः स एव स्वयमुद्भवमौ ॥ ७ ॥ अ० १ ।

इस दशा के अनन्तर उत्पत्तिरहित और इन्द्रियों से न जानने योग्य प्रकृति को प्रेरणा करने वाले, महत्तत्त्व, आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी आदि कारणों के बल से युक्त परमात्मा ने इनको प्रकाशित करके अपने को प्रकट किया ॥ ६ ॥ जोकि इन्द्रियों से नहीं जाना जाता और परमसूक्ष्म, नित्य, और सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त तथा आकार रहित, अतएव अचिन्त्य है, वही अपने आप प्रकट हुआ ॥ ७ ॥

इन श्लोकों में परमात्मा के प्रकट होने का अभिप्राय जगत अथवा विराट् रूप में प्रकट होने से है। इनकी शैली वैसी ही

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमेलक फल है। इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है। जिसे लंका के राजा ने बनवाया है। उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं। इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं। इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है। बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं। वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था। यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी। मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे। यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था। यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे। कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये। उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे। पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था। परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे। बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे। पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है। कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे। यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था। आंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । आंध्र

ईश्वर को क्या आवश्यकता अनुभव हुई, जिससे उसे शरीर धारण करना पड़ा ? इस प्रश्न के उत्तर में प्रायः गीता के प्रसिद्ध श्लोक जो हिन्दुओं में एक लोकोक्ति बन गये हैं—

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।

अभ्युत्थानमधर्मस्य तदा ऽऽत्मानं सृज्याम्यहम् ॥७॥

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।

धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥८ अ० ४ ।

उद्धृत किये जाते हैं। इसी प्रकार श्रीमद्भागवत जो वैष्णव सम्प्रदाय का मूल ग्रंथ है, का निम्न श्लोक भी यही आशय प्रकट करता है.—

यदा यदा हि धर्मस्य क्षयोवृद्धिश्च पाप्मान् ।

तदातु भगवानीश आत्मानं सृजते हरि ॥५६॥ स्कं० ६ अ० २४।

उपर्युक्त श्लोकों का यही भाव है कि जब-जब धर्म का क्षय होने लगता है और पाप बढ़ जाता है, तब-तब भद्रपुरुषों की रक्षा करने एवं धर्म के स्थापनार्थ परमात्मा अवतार लेता है। किन्तु देवी भागवत में जो शाक्त सम्प्रदाय का प्रसिद्ध मुख्य पुराण है इस युक्ति की तीव्र आलोचना की गई है:—

माया विमोहिता मन्दा प्रवदन्ति मनीषिणः ।

करोति स्वेच्छया विष्णुरवताराननेकशः ॥४७॥

मन्दोऽपि दुःखगहने गर्भवासे ऽतिसंकटे ।

न करोति मतिं विद्वान् कथं कुर्यात् स चक्रभृत् ॥४८॥

कौसल्यादेवकीगर्भे विष्णोर्मलसमाकुले ।

स्वेच्छया प्रवदंश्चद्वागतो हि मधुसूदनः ॥४९॥

वैकुण्ठसदन त्यक्त्वा गर्भवासे सुखं नु किम् ।

चिन्ताकोटिसमुत्थाने दुःखदे विपसंमिते ॥५०॥

(देवी भागवत स्कं० ३ अ० २६)

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अध्र

अर्थात् लोक दृष्टि के अनुसार परमात्मा का भी इन्द्रियों का अधिष्ठान यदि शरीर माने तो ठीक नहीं क्योंकि ईश्वर के शरीर वा इन्द्रियादि मानने से उसे भी संसारी जीवों की तरह सुख दुःख भोक्ता मानना पड़ेगा और ऐसा मानने से ईश्वर भी अनीश्वर हो जायगा ।

अवतारवाद के खंडन में जितने भी प्रमाण यहां उद्धृत किये गये हैं, वे किसी टीका टिप्पणी की अपेक्षा नहीं रखते । समस्त प्राचीन वैदिक साहित्य इस वाद का सर्वथा निषेध करता है । अतः सिद्ध है कि वैदिक काल से बहुत पीछे जब मूर्ति पूजा की सृष्टि की गई तो ईश्वर को साकार सिद्ध करने के लिये अवतारवाद की कल्पना की गई ।

कुछ लोग वेद शास्त्रों में 'मूर्तिपूजा न करो' अथवा 'ईश्वर अवतार नहीं लेता' इस प्रकार के विरोध सूचक स्पष्ट मंत्रों का अभाव बताकर यह भ्रम उत्पन्न करने का प्रयत्न करते हैं कि यदि वेद शास्त्रों में इनका समर्थन नहीं है तो विरोध भी नहीं है । किन्तु लोग यह भूल जाते हैं कि किसी वस्तु का स्पष्ट निषेध, उसके प्रचार के पीछे उसके दोष देखकर ही सम्भव है । जब जो वस्तु प्रचलित ही नहीं थी, तब उसका निषेध कैसा ? जैसा कि हम सिद्ध कर चुके हैं, मूर्तिपूजा और अवतारवाद का जन्म काल वैदिक काल से बहुत पीछे का है । अतएव यदि वैदिक साहित्य में उनका स्पष्ट विषेध अथवा विशेष खंडन नहीं है, तो इसमें न कोई आश्चर्य है और न कोई दोष है ।

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । आंध्र

तो लोगों को यह भ्रम उत्पन्न हो गया कि वेदों में बहुदेवतावाद और उन देवों की पूजा का विधान है। आगे चलकर इसी कल्पना के आधार पर उन-उन देवों की मूर्तियां बनाली गईं और उनकी पूजा प्रारम्भ हो गई। किन्तु जैसे-जैसे मूर्तिपूजा आय का एक अच्छा साधन सिद्ध होने लगी वैसे-वैसे प्रत्येक प्राकृतिक वस्तु का एक पृथक् अधिष्ठातृ-देव कल्पित कर लिया गया और उस देव की मूर्ति निर्माण करके उसकी पूजा प्रचलित कर दी गई। जन साधारण हिन्दुओं की आज भी यह धारणा है कि नदी, पहाड़, अग्नि, वायु आदि समस्त प्राकृतिक जड़ पदार्थों के पृथक्-पृथक् अदृश्य अधिष्ठातृ देव हैं। पुराणों में इनकी पूजा का स्थान स्थान पर वर्णन है। किन्तु यह अधिष्ठातृ देव क्या हैं, कैसे हैं और कहाँ हैं ? इसकी कभी कोई जानने की चिन्ता नहीं करता। क्या आत्मा की भाँति उनकी कोई चेतन सत्ता है ? निश्चय ही उनकी कोई चेतन सत्ता होनी चाहिए, क्योंकि जड़ वे हो नहीं सकते। फिर क्या वह ईश्वर की भाँति सर्वज्ञाता, सर्वशक्तिमान् और कर्म-फल दाता हैं ? यदि उन्हें सर्वज्ञाता, सर्वशक्तिमान् और 'कर्म फल दाता मान लिया जाय तो फिर इनमें और ईश्वर में क्या भेद है ? अथवा वे अजर अमर हैं ? इत्यादि प्रश्नों का कोई निश्चयात्मक उत्तर नहीं दिया जा सकता।

पुराणों में साधारण मनुष्यों की भाँति देवों का पारस्परिक युद्ध, ईर्ष्या, द्वेष पूर्ण अनेक कथाओं का वर्णन है, जो बहुदेवतावाद का स्वाभाविक परिणाम है। कुछ लोगों की धारणा है कि जिस प्रकार राज्य प्रबन्ध के लिये अनेक कर्मचारियों की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार सृष्टि को नियम में रखने के लिये अनेक देवताओं की आवश्यकता है। किन्तु यह भ्रम

ईश्वर की सर्वव्यापकता तथा सर्वशक्तिमत्ता को न समझने से ही उत्पन्न होता है। राजा एक देशीय होने से सर्वज्ञाता नहीं है और अल्प शक्ति रखने के कारण प्रजा पर अकेला शासन भी नहीं कर सकता, अतः उसे अपनी सहायता के लिये अनेक राज्य-कर्मचारियों की आवश्यकता होती है। किन्तु ईश्वर सर्वव्यापक होने से सब कुछ जानता है और सर्वशक्तिमान होने से उसे अपने कार्य के लिये किसी अन्य शक्ति की सहायता की आवश्यकता नहीं।

अब प्रश्न यह है कि जब वेदों में इन देवों की पूजा का कहीं विधान नहीं है तो फिर यह भ्रम कैसे उत्पन्न हो गया? जैसा कि हम पूर्व लिख चुके हैं, वैदिक भाषा में एक शब्द अनेक अर्थों में प्रयुक्त होता था, किन्तु आगे चलकर उनके अर्थ सीमित हो गये और वेद मंत्रों के कुछ के कुछ अर्थ समझे जाने लगे। इसी प्रकार ईश्वर के भी अनेक गुण होने से उसके अनेक गुणवाची नामों का वेदों में उल्लेख है। ऋग्वेद में कहा भी है :—

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यस्स सुपर्णो गरुत्मान्।

एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः।

ऋग० १।१६४।४६॥

एक सद्वस्तु परमात्मा को इन्द्र, मित्र, वरुण, अग्नि, दिव्य, सुपर्ण, गरुत्मान, यम तथा मातरिश्वा आदि नाम देते हैं। अर्थात् इन नामों से उस एक ही वस्तु का वर्णन होता है।

यजुर्वेद में ईश्वर को अग्नि, वायु, आदित्य, चन्द्रमा तथा शुक्र आदि कहा गया है :—

तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद्वायुस्तद्

चन्द्रमाः।

तदेव शुक्रं तद् ब्रह्म ता आपः स प्रजापतिः ॥ य० ३२।१

अग्नि, आदित्य, वायु, चन्द्रमा, शुक्र, ब्रह्म, आप., प्रजापति इन शब्दों द्वारा परमात्मशक्ति का बोध होता है । अर्थात् प्रकाश स्वरूप होने से उस परमात्मा का नाम अग्नि, कभी विनाश न होने से आदित्य, जगत् का धारण तथा जीवन होने से वायु, आनन्द स्वरूप होने से चन्द्रमा, अत्यन्त पवित्र होने से शुक्र, सबसे बड़ा होने से ब्रह्म तथा प्रजा का पालन करने से प्रजापति है । इस प्रकार स्वयं वेदों से अनेक प्रमाण दिये जा सकते हैं, जिनमें ईश्वर के लिये अनेक ऐसे नाम प्रयुक्त हुए हैं, जिनका जीवधारी मनुष्य, एवं प्राकृतिक पदार्थों के लिये भी प्रयोग होता है । किन्तु दुर्भाग्यवश हमने उनको अनेक देवता समझ लिया और ईश्वर के स्थान में उनकी पूजा प्रारम्भ कर दी । आज भी हम ईश्वर को माता, पिता, बन्धु सखा आदि अनेक नामों से सम्बोधन करके उसकी प्रार्थना करते हैं किन्तु उससे यह भ्रम किसी को नहीं होता कि हम अपने माता, पिता, बन्धु आदि की स्तुति अथवा प्रार्थना कर रहे हैं । इसी प्रकार वेदों में जहाँ-जहाँ सूर्य, चन्द्र, वरुण इन्द्र, अग्नि, वायु आदि की स्तुति, प्रार्थना का प्रसङ्ग है, वहाँ उससे तात्पर्य परमात्मा की स्तुति प्रार्थना ही समझना चाहिए, जड़ जगत् की वस्तु नहीं ।

वेदों में केवल एकेत्वरवाद का ही प्रतिपादन है, इसे आज योरूप के विद्वान् भी स्वीकार करने पर विवश हुए हैं और सायणाचार्य आदि वेद भाष्यकारों की शैली तरु का, जिसके आधार पर बहुत से पश्चिमी विद्वान् वेदों में बहुदेवतावाद की प्रतिष्ठा देगते हैं, खंडन करते हैं ।

मिस्टर राय ने अपने प्रसिद्ध कोप के पहिले भाग के ४-६ पृष्ठों से जो लिखा है उसका सार हम नीचे देते हैं:—

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

नाष्टमो न नवमो दशमो नाप्युच्यते ।१८॥

ईश्वर न दूसरा है न तीसरा है न ही चौथा कहलाता है ।१६।

न पाँचवा है, न छटा है, न सातवाँ ही कहलाता है ।१७॥

न आठवाँ है न नवाँ है न ही दसवाँ कहलाता है ।१८॥

तमिदं निगतं सहः स एष एक एकवृदेक एव । अथर्व० १३।४

वह सर्व शक्ति है, वह एक है, एकवृत्त और एक है ।



इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमेलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

यत्कृत्तव्यं मनुष्येण धर्षणा प्रतिमार्जिता ।

तत्कृतं रावणं हत्वा मयेदं मानकांक्षिणा ॥१३॥

(युद्ध का० सर्ग ११५)

शत्रु द्वारा किये गये अपमान को मिटाने के लिये मनुष्य को जो कुछ करना चाहिये वह मैंने मान चाहते हुए रावण को मार कर किया ।

आत्मानं मानुषं मन्ये रामं दशरथात्मजम् ॥१३॥

(युद्ध कां० स० ११७)

मैं अपने को मनुष्य समझता हूं, मैं दशरथ-पुत्र राम हूँ ।

इसी प्रकार ऋषि नारद ने वाल्मीकी मुनि से राम के गुण वर्णन करते हुए कहा कि राम पराक्रम में विष्णु के समान हैं, यह नहीं कहा कि विष्णु हैं अथवा विष्णु अवतार हैं:—

आर्य्यः सर्वसमश्चैव सदैक प्रियदर्शनः ।

स च सर्वगुणोपेत कौशल्यानन्दवर्धनः ॥१६॥

समुद्र इव गाम्भीर्ये धैर्येण हिमवानिव ।

विष्णुना सदृशो वीर्ये सोमवत् प्रियदर्शनः ॥१७॥

बालकाण्ड स० १

वह आर्य्य हैं, वह सबको समान दृष्टि से देखने वाले हैं । वह सब गुणों से युक्त कौशल्या के आनन्द को बढ़ाने वाले हैं गम्भीरता में समुद्र के समान हैं, धैर्य में हिमालय की तरह, पराक्रम में विष्णु के समान और प्रिय दर्शन में चन्द्रमा के तुल्य हैं ।

सीता के वियोग पर राम ने जो विलाप किया वह भी एनको ईश्वरावतार सिद्ध न करके मनुष्य ही सिद्ध करता है । इस विलाप का वाल्मीकीय रामायणमें बड़ा करुणाजनक वर्णन है

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

की कोटि में रख दिया दूसरी ओर राम को ईश्वर बताकर उनके आदर्शों को जनसाधारण के अनुकरण की वस्तु न छोड़ा। वे समझने लगे कि राम तो ईश्वर थे भला हम उनका क्या अनुकरण कर सकते हैं। इन वादों से इस देश को जो हानि पहुँची है उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती।



इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमेलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमेलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमेलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । आंध्र

(महर्षि व्यास ने) चौबीस सहस्र (श्लोकयुक्त) भारत मंदिता बनाई थी। उपाख्यानों के बिना इतने को ज्ञानी लोग 'भारत' कहते हैं। इसके विपरीत एक दूसरा श्लोक देकर कुछ लोग श्लोक संख्या केवल ८८०० मिद्ध करने का प्रयत्न करते हैं—

अष्टौ श्लोकमहन्त्राणि अष्टौ श्लोकशतानि च ।

अहं वेदि शुक्रो वेत्ति सख्यो वेत्ति वा न वा ॥आदि १।८१॥

आठ महन्त्र आठ सौ श्लोकों को मैं जानता हूँ, शुक जानता है सख्य न जाने जानता है या नहीं जानता ।

यह श्लोक संख्या इतनी किम प्रकार बढ गई, इसका भी स्वयं महाभारत ग्रन्थ से ही बहुत कुछ पता लग जाता है। सूत लोमहर्षण के पुत्र सूत उग्रभवा कहते हैं कि, "एकंशतसहस्रन्तु मयोक्तां वै निबोधत ।" (आदि १।१०७) "एक लाख श्लोक मेरा बनाया हुआ समझो ।" इसमें यह सिद्ध होता है कि किसी समय यह श्लोक संख्या एक लाख से भी कहीं अधिक पहुँच चुकी थी ।

स्वामी दयानन्द ने इस सम्बन्ध में एक अन्य नात्नी अपने सत्यार्थप्रकाश में राजा भोज लिखित संजीवनी इतिहास के आधार पर दी है, जिसमें लिखा बताया जाता है कि "व्यास जी ने ४४४० और उनके शिष्यों ने ४६०० अर्थात् सब १०००० के प्रमाण भारत बताया था। वह महाराज विक्रमादित्य के समय में चौस सहस्र, महाराज भोज कहते हैं, मेरे पिता के समय में २५ सहस्र, अब मेरी आधी उम में तीस सहस्र श्लोकयुक्त महाभारत की पुस्तक मिलती है," इत्यादि ।

एक अन्य प्रमाण हम विषय में गरुड़पुराण का भी उपलब्ध है जिनमें भारत की श्लोक संख्या केवल ८८ हजार प्रमाणित होती है.—

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इद्देश्य केवल यह सिद्ध करना है कि इतना अधिक प्रक्षिप्त होने पर भी महाभारत एवं गीता दोनों में ही मूर्तिपूजा के समर्थन में एक भी श्लोक नहीं है। हाँ मूर्तिपूजा के खण्डन में एक स्पष्ट श्लोक महाभारत में मिलता है:—

मृच्छिलाधातुदार्वादिमूर्तावीश्वरबुद्धयः ।

क्लिश्यन्ति वपसा मूढाः परां शान्तिं न यांति ते ॥

मूर्ख लोग मिट्टी, पाषाण, धातु अथवा काष्ठ की मूर्तियों को ईश्वर समझते हैं। इन लोगों को कभी भी शांति प्राप्त नहीं हो सकती।

प्रसिद्ध भारतीय इतिहासकार रायबहादुर चिन्तामणि विनायक वैद्य ने अपने 'भारतमीमांसा' ग्रन्थ में इस विषय का सविस्तार विवेचन किया है। उनका भी यही मत है कि महाभारत काल तक इस देश में मूर्तिपूजा प्रचलित नहीं थी। हम उसे उन ही के शब्दों में पाठकों के अवलोकनार्थ नीचे उद्धृत करते हैं:—

(महाभारत में) स्पष्ट देखा पड़ता है कि प्रत्येक आर्य ब्राह्मण क्षत्रिय, और वैश्य प्रति दिन संध्या एवं यज्ञ किया करते थे। कम से कम भारतीय योद्धाओं के वर्णन में इस बात की कहीं कमी नहीं है। जिस तरह यह नहीं देखा पड़ता कि कहीं समय पर संध्या करना राम और लक्ष्मण भूल गये हों, उन्नी तरह समझीते के लिये जाते हुए श्री कृष्ण का जो वर्णन महाभारत में है, उसमें प्रातः सायं संध्या करने का वर्णन करने में भी कवि ने भूल नहीं की:—

प्रातःकथाय कृष्णन्तु कृतवान्मर्यामाह्विकम् ।

प्राक्षर्यैरभ्यनुजाता प्रययौ नगरं प्रति ॥

(महा० उद्योग पर्व अ० १३)

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । आंध्र

कृचा पौर्वाहिकं कृत्यं न्नातः शुचिरलंकृतः ।

उपतस्थे विवस्वतं पाचकं च जनार्दनः ॥

लिखा है कि श्रीकृष्ण और युधिष्ठिर ने सन्ध्या एवं होम करके ब्राह्मणों को दान दिया इत्यादि-इत्यादि (पृ० ४४७-४४८) मूर्तिपूजा पर अग्ने विचार व्यक्त करते हुए, वह लिखते हैं:—

यह बात निर्विवाद है कि इस वर्णन में कहीं मूर्तिपूजा का वर्णन नहीं है । यद्यपि श्रीकृष्ण अथवा युधिष्ठिर की आह्निक क्रियाओं का वर्णन विस्तार पूर्वक किया गया है, तथापि उसमें किसी देवता की धातुमयी अथवा पाषाणमयी मूर्ति के पूजे जाने का वर्णन नहीं है । उस समय यदि लोगों की आह्निक क्रिया में देवताओं की पूजा का समावेश हुआ रहता, तो उस विषय का उल्लेख इस वर्णन में अवश्य आया होता । इससे निश्चय पूर्वक अनुमान होता है कि भारतीय युद्धकाल में और महाभारत काल पर्यन्त आर्यों के आह्निक धर्म में किसी प्रकार के देवता की पूजा समाविष्ट न हुई थी । किसी घर में देवता की मूर्ति रखकर उसकी पूजा शुरू नहीं हुई थी । भिन्न-भिन्न ग्रन्थ सूत्रों में भी देवताओं की पूजा की विधि नहीं बतलाई गई है । इससे यह बात निर्विवाद है कि देवताओं की पूजा की विधि महाभारत काल के पञ्चात् अनेक वर्षों में उत्पन्न हुई है ।” (पृ० ४४८-४४९) आगे वह पुनः लिखते हैं:—“परन्तु महाभारत में मन्दिरों और मन्दिरों में स्थित मूर्तियों का वर्णन बहुत मिलता है । यह बात सच है कि मूल वैदिक धर्म में मन्दिरों अथवा मूर्तियों का साहाय्य न था और न लोगों के नित्य के धार्मिक कृत्य में मूर्ति का समावेश था । महाभारत में सीति ने जो नवीन अध्याय जोड़े हैं, उनमें मूर्तियों और मन्दिरों का वर्णन है” (पृ० ४४९) “यद्यपि मन्दिर और

अवतारवाद का भी खण्डन निम्न श्लोकोंसे स्पष्ट है:—

मनीषी मनसा विप्रः दृश्यत्यात्मानमात्मनि ॥१५॥

न ह्ययं चक्षुषा दृश्यो न च सर्वैरपीन्द्रियैः ।

मनसा तु प्रदीपेन महानात्मा प्रकाशते ॥१६॥

अशब्दस्पर्शरूपं तदरसागन्धमव्ययम् ।

अशरीरं शरीरेषु निरीक्षेत निरिन्द्रियम् ॥१७॥

शान्ति पर्व अ० २३६

हे विप्र ! मनीषी अपनी आत्मा में ही आत्मा को देखता है । यह आत्मा न आँखों से देखने योग्य है और न सारी इन्द्रियों से । मन रूप प्रदीप से यह देखा जा सकता है । १६। वह परमात्मा शब्द स्पर्श, रूप, रस, गन्ध से रहित, अव्यय है और शरीर में व्याप्त भी है । उस अशरीरी और निरिन्द्रिय को देखें । १७।

श्री मद्भगवद् गीता में स्थान-स्थान पर अग्निहोत्र, तप, योग, स्वाध्याय आदि का ही वर्णन है, मूर्तिपूजा आदि जड़ उपासना का नहीं:—

तस्मादोमित्युदाहृत्य यज्ञदानतपः क्रियाः ।

प्रवर्तन्ते विधानोक्ताः सततं ब्रह्मवादिनाम् ॥२४॥

तदित्यनभिसन्धाय फलं यज्ञतपः क्रियाः ।

दान क्रियाश्चविविधाः क्रियन्ते मोक्षकौक्षिभिः ॥२५॥

इसलिये ओंकार का उच्चारण करके यज्ञ, दान, तप, यह क्रियाएँ वैदिक लोगो में निरन्तर विधिपूर्वक होती रहती हैं । २४। हे अर्जुन ! मोक्ष की इच्छा वाले, फल की इच्छा न करके यज्ञ, तप की क्रिया और दान की नाना प्रकार की क्रियाएँ 'तत् सत्' शब्द उच्चारण करके करते हैं । २५। यज्ञ से अभिप्राय अग्निहोत्र से ही है, यह नीचे के श्लोक से स्पष्ट हो जाता है:—

अश्रद्धया हुतं दत्तं तपस्तप्तं कृतं च यत् ।

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमेलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । आंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । आंध्र

करणवच्चेन्न भोगादिभ्यः । वेदान्त सूत्र २।२।४०
 “शरीरत्वे सति संसारिवद् भोगादिप्रसङ्गादीश्वरस्यापि
 अनीश्वरत्वं प्रसज्येत्”

शरीर सहित साकार होने पर, संसारी पुरुष के समान
 भोगादि के प्रसङ्ग से ईश्वर होने पर उसमें भी अनीश्वरत्व हो
 जायगा ।

गणेश पूजा की आलोचना करते हुये शङ्कर स्वामी कहते
 हैं:—“भो गाणपत्या सत्यमुक्तं भवता गणपतेः सर्वोत्तमस्व
 वनमथावलाद्रुद्राद्युत्पत्तिश्चेति भवद्भिः प्रतिपादितं किलतद-
 समञ्जसम् प्रतिभाति । कथं सगुणस्य गजमुखस्य गणपतेः
 रुद्रगणैः लयोऽनुगस्य जगत् कारणत्वं कल्पयितुमुचितम् ।
 किञ्च रुद्रसुत इतिलोके प्रसिद्धरस्ति, तस्यब्रह्मणत्वे कल्पिते पित्रा-
 दिकारणत्वं सुतस्यानुचितमेव, अतो रुद्रादिकारणं परब्रह्मैव
 “सदेव सौम्येदमग्र आसीत्” इत्यादि वाक्यात् ।

शङ्कर दिग्विजय पृ० ८४

गणपति के पूजक । तुम्हारा यह कहना कि गणपति सबसे
 उत्तम है सत्य नहीं है । सगुण गणेश, गजमुख वाला जो रुद्र के
 गणों के साथ उत्पन्न और नष्ट होता है, वह जगत् का कारण
 कैसे हो सकता है ? क्योंकि वह रुद्र का पुत्र है, यह लोक में
 प्रसिद्ध है । उसको ब्रह्म मानोगे तो वह पुत्र होने से रुद्रादिकों
 का कारण नहीं होगा । इसीलिये ब्रह्म ही रुद्रादि का कारण है ।
 ‘वही सत्य रूप सृष्टि के पूर्व था’ इत्यादि उपनिषद् प्रमाण है ।

शङ्कर भाष्य से ऐसे ही अन्य प्रमाण उपस्थित किये जा सकते
 हैं, किन्तु ग्रन्थ विन्तार भय से हम उन्हें यहां नहीं देते । परन्तु
 श्री शङ्कराचार्य का मूर्तिपूजा के विरुद्ध प्रयत्न विफल रहा और

बौद्ध-धर्म के पतन के साथ इस देश में अनेक प्रकार की मूर्तियों की रचना होती ही गई जिन्होंने बुद्ध तथा तीर्थङ्करों की मूर्तियों का स्थान ग्रहण कर लिया । अनेकानेक पुराणों की रचना भी इसी काल में की गई । वर्तमान हिन्दू-धर्म की मूर्तिपूजा आचार-विचार, पर्व, तीर्थ, जन्म-जात-वर्णन्यवस्था, सब ही की स्फुरेखा इसी समय की गई । उसके तीन मुख्य सम्प्रदायों-शैव, शाक्त तथा वैष्णव, का जन्म भी इसी काल में हुआ । अठारह महा-पुराण इन ही तीन सम्प्रदायों के आधार भूत ग्रन्थ हैं । वैष्णव-सम्प्रदाय-प्रधान पुराणों ने मूर्तिपूजा, अवतारवाद, तीर्थमाहात्म्य को जितना महत्व दिया है, उतना शैव अथवा शाक्त-प्रधान पुराण ने नहीं दिया ।

पुराणों के अध्ययन से ऐसा प्रतीत होता है कि इस काल में भी विद्वानों ने मूर्ति पूजा का विरोध किया । उन्होंने या तो इसका सर्वथा नगण्य किया, या उसे अज्ञानी, मूर्ख अथवा निचली श्रेणी के लोगों की वस्तु बताकर ज्ञानियों के लिये उसका निषेध किया । मन्दिरों में पूजा कार्य ब्राह्मणों ने स्वीकार नहीं किया और यदि किसी ने लालच-वश स्वीकार कर लिया तो उसे जातिन्युत कर दिया गया । पुराणों से ऐसे ही कुछ प्रमाण हम नीचे देते हैं:—

प्राप्ते कलावदह दुष्टतरे च काले ।
न न्यां भजन्ति मनुजा ननु वद्विनास्ते ।
धूर्तैः पुराणचतुरैर्हरिशास्त्राणां ।
मेवापरारचयिदितान्नच निर्मितानाम् ॥१८॥

देवी भागवत स्क० ४ अ० १६

इन चार कलियुग में पुराणों के बनाने में धूर्त चतुर लोगों

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमेलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । आंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमेलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । आंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमेलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमेलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । आंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमेलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमेलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । आंध्र

विस्तार भय से हम यहाँ उद्धृत नहीं करते ।

विष्णु के अनेक अवतारों का कारण भृगु ऋषि का शाप बताते हुए देवी भागवत में विष्णु को अत्यन्त अपमानित करने का प्रयत्न किया गया है । इन्द्र के कहने पर विष्णु ने अपने सुदर्शन चक्र से भृगु की पत्नी का शिर काट लिया । उसके मरने पर दुःखी हो कर भृगु ने जो शाप दिया, वह निम्नांकित है.—

अकृतं ते कृतं विष्णु जानन् पापं महामते ।
वधोऽयं विप्रजाताया मनसा कर्त्तुमक्षमः ॥२॥
तामसस्त्वं कथं जातः कृतं कर्मातिनिन्दितम् ।
अवध्या स्त्री त्वया विष्णो हता कतिनिन्दिरागसा ॥४॥
शपामि त्वां दुराचारं किमन्यत्प्रकरोमि ते ।
विधुरोऽहं कृतं पापं त्वयाऽयं शक्रकारणात् ॥५॥
न शपेऽहं तथा शक्रं शपे त्वां मधुसूदन ।
सदा ब्रह्म परोऽसि त्वं कीदृयोनिदुराशय ॥६॥
ये च त्वा सात्विकं प्राहुस्ते मूर्खा मुनयः किल ।
तामसस्त्वं दुराचारः प्रत्यक्षं मे जगद्गते ॥७॥
अवतारा मृत्युलोके सन्तु मच्छाप सम्भवा ।
प्रायो गर्भभवं दुःखं भुङ्क्व पापाज्जनार्दन ॥८॥

दे० भा० स्कं० १४। अ० १२

हे मधुसूदन ! तुमने अत्यन्त बुद्धिमत् होकर भी जान कर ऐसा अकार्य किया । जिस विप्र कन्या का वध मन से भी नहीं विचारा जा सकता उसको तुमने मृत्वात् कर डाला । हे विष्णु ! तुमने किस लिये तमोगुण-युक्त होकर अतिनिन्दित कर्म किया ? स्त्री जाति अवयव है । तुमने विना अपराध इस अवला को क्यों मारा ? ।४। तुम्हारा यह आचरण अत्यन्त

निन्दित है । इस समय मैं तुम्हारा क्या करूँ ? तुमको शाप देना ही उचित है । हे पापिष्ठ ! तुमने इन्द्र के कारण मुझको विधुर बना दिया । ५ । मैं इन्द्र को शाप न देकर तुमको ही शाप दूँगा । तुम सदा सर्प की भाँति कपट व्यवहार करते हो । तुम दुष्ट हो । ६ । जो मुनि तुमको सतोगुणी कहते हैं वे अत्यन्त मूर्ख हैं । तुम तामसी और दुराचारी हो, यह मैंने आज प्रत्यक्ष जान लिया । ६ । तुम मेरे शाप से मृत्युलोक में अनेक बार अवतार लोगे और गर्भ की चन्त्रणा द्वारा अपने पाप का फल भोगोगे । ८ ।

इसी पुराण में आगे फिर लिखा है:—

शप्तो हरिस्तु भृगुणा कुपितेन कामं मीनो वभूवकमठः खलु सू-
रस्तु । पश्चान्नृसिंह इति यच्छलकृद्धरायां तान्सेवता जननि
मृत्युभयं न किं स्यात् ॥ १८ । दे० भा० स्कं० ५ । अ० १६ ॥

हे जननि ! प्रकुपित भृगु मुनि के शाप से ही हरि पृथ्वी में मीन, कूर्म, शूकर, नृसिंह और वंचनातत्पर वामन इत्यादिक रूप धारण करके अवतीर्ण हुए थे । इसमें उनकी पराधीनता ही है । जो इन पराधीन अवतारों की सेवा करते हैं उनको मृत्यु-भय क्यों न होगा ?

किं चित्रं नृप देवी सा ब्रह्मा विष्णु सुरानपि ।
नर्तयत्यनिशं माया त्रिगुणानपरान् किम् ॥
गर्भवासोद्भवं दुःखं विण्मूत्रस्तायु मंयुतम् ।
विष्णोरापादितं सम्यग् यथा विग- लीलया ॥ ५
पुरा रामावतारेऽपि निर्जरा वानराः कृताः ।
विदितं ते तथा विष्णुः दुःख पाशेन मोहितः ॥ ६

दे० भा० स्कं० ४ । अ० २०

हे नृपते ! त्रिगुणा माया देवी ब्रह्मा विष्णु इत्यादि देवताओं

और ब्रह्मा से कहा—तुमने असत्य भाषण किया है अतः तुम्हारी पूजा नहीं होगी .—

। नातस्ते सत्कृतिलोके भूयात्स्थानोत्सवादिकम् ।

ब्रह्मवैवर्त पुराण कृष्ण जन्म खण्ड अ० ३२ में भी इसी आशय की एक कथा दी हुई है, जिसके द्वारा ब्रह्मा को अपूज्य ठहराया गया है वहा है कि विष्णु की प्रिया मोहनी एक बार कामातुर होकर ब्रह्मा पास गई। ब्रह्मा ने विष्णु की प्रिया होने के कारण इसका निषेध किया तब मोहनी ने ब्रह्मा को शाप दिया कि जाओ तुम्हारी संसार में पूजा न होगी। ब्रह्मा ने विष्णु को जाकर समस्त वृत्तान्त सुनाया। विष्णु ने शाप दूर करने का उपाय गङ्गा स्नान बताया और कहा कि तुम्हारी पृथक् पूजा तो न होगी, किन्तु अन्य देवों के साथ होगी.—

। यदन्यदेवपूजाया तव पूजा भविष्यति ।

उपर्युक्त सभी कथाएं विचित्र हैं, जिनमें किसी न किसी प्रकार ब्रह्मा के शिर दोष मढ़कर उसकी पूजा का निषेध किया गया है। अन्यथा पुराणों में विष्णु और शिव को कलङ्कित करने वाली कथाओं की ब्रह्मा से कहीं अधिकता है। फिर ब्रह्मा को ही क्यों लक्ष्य बनाया गया? हमारा विचार है कि अब्राहमणों ने जिनका कि मूर्तिपूजा के प्रचार में विशेष हाथ है, ब्राह्मणत्व के प्रतीक ब्रह्मा को अपमानित करने के लिए ही इन कथाओं की रचना की और उसे अपूज्य ठहराया।

जैसा कि हम पूर्व सिद्ध कर चुके हैं मूर्तिपूजा का जन्म बौद्ध-काल में हुआ और सर्वप्रथम बुद्ध को मूर्ति इस देश में पूजी जाने लगी। भगवान् बुद्ध स्वयं क्षत्रिय वंशज थे और उनका

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमेलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अध्र

खोपड़ी हाथ में लिए ऋत्विज के समीप आकर बैठ गये। यह देखकर वेदपाठी ब्राह्मणों ने कहा कि तुम इस प्रकार का निन्दित वेश बनाए यज्ञशाला में कैसे चले आये ? उन्हें यज्ञशाला से निकालने के अनेक प्रयत्न किये गये, किन्तु वह न गये। अन्त में उन्हें भोजन कराकर सन्तुष्ट किया गया। तब कहीं यह कहकर कि हम पुष्कर स्नान के लिये जा रहे हैं वे वहाँ से टले, किन्तु अपना कपाल वहीं यज्ञशाला में ही छोड़ गये जिसे ब्राह्मणों ने बाहर फेंक दिया। एक कपाल के फेंके जाने पर दूसरा कपाल वहाँ दिखाई देने लगा। इस प्रकार एक कपाल के फेंके जाने पर वहाँ फिर दूसरा कपाल उपस्थित हो जाता था। और हजार तक फेंके जाने पर भी उनका अन्त नहीं हुआ। विवश होकर ब्राह्मण, ब्रह्मा सहित पुष्कर गये और शिव की वही स्तुति-प्रार्थना करने पर वह कपाल वहाँ से हटा। एक मन्वन्तर बीत जाने पर पुनः ब्रह्मा के यज्ञ में शिवजी आ उपस्थित हुए। इस बार भी वह अपने उसी नग्न वेश में उपस्थेन्द्रिय को हाथ में लिये यज्ञमंडप में आगये। लोगों ने उन्हें पुनः धिक्कारा और चसीद कर बाहर कर दिया और कहा कि स्त्रियों की उपस्थिति से तुम्हारा इस प्रकार प्रवेश निन्दनीय है। इस पर क्रुद्ध होकर शिव ने ब्राह्मणों को अनेक शाप दिये।

एक दूसरी कथा शिव द्वारा अपने श्वसुर राजा दक्ष के यज्ञ विध्वंस की इसी पद्म पुराण सृष्टि खंड अ० ५ में आर्द है। दक्ष ने अपने यज्ञ में शिव को आमन्त्रित नहीं किया। उसका कारण दक्ष ने जो पार्वती को बताया, वह शिव के आसुरी कापालिक स्वरूप का भली प्रकार दिग्दर्शन कराता है। दक्ष ने कहा—तुम्हारे पति खोपड़ी का पात्र लिये रहते हैं। चर्म ओढ़ते हैं, चिता की भस्म लगाते हैं और नंगे रहते हैं। श्मशान भूमि में निवास

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । आंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

स चेशां सकृदक्षां च हस्ते लिङ्गं विधारयन् ॥१०
 मनसा च प्रियं तेषां कर्तुं वै वनवासिनाम् ।
 जगाम तद्वनं प्रीत्या भक्तप्रीतो हरः स्वयम् ॥११
 तं दृष्ट्वा ऋषिपत्न्यस्ताः परं त्रासमुपागताः ।
 विह्वला विस्मिताश्चान्याः समाजग्मुस्तथा पुनः ॥१२
 आलिलिङ्गुस्तथा चान्याः करं धृत्वा तथा पराः ।
 परस्परं तु संधर्षात्संमग्नास्ताः स्त्रियस्तदा ॥१३
 एतस्मिन्नेव समये ऋषिवर्याः समागमन् ।
 विरुद्धं तं च ते दृष्ट्वा दुःखिताः क्रोधमूर्च्छिताः ॥१४
 तदा दुःखमनुप्राप्ताः कोऽयं कोऽयं तथा ब्रुवन् ।
 समस्ता ऋषयस्ते वै शिवमायाविमोहिता ॥१५
 यदा च नोक्तवान् किञ्चित्सोऽवधूतो दिगम्बरः ।
 उच्युस्तं पुरुषं भीमं तदा ते परमर्षयः ॥१६
 त्वया विरुद्धं क्रियते वेदमार्गविलोपि यत् ।
 ततस्त्वदीयं तल्लिङ्गं पततां पृथिवीतले ॥१७
 इत्युक्ते तु तदा तैश्च लिङ्गं च पतितं क्षणात् ।
 अवधूतस्य तस्याशु शिवस्याद्भुतरूपिणः ॥१८
 तल्लिङ्गं चाग्निवत्सर्वं यद्दाह पुरः स्थितम् ।
 यत्र यत्र च तद्याति तत्र तत्र दहेत्पुनः ॥१९
 पाताले च गतं तच्च स्वर्गे चापि तथैव च ।
 भूमौ सर्वत्र तद्यातं न कुत्रापि स्थिरं हि तत् ॥२०
 लोकाश्च व्याकुला जाता ऋषयस्तेऽति दुःखिता ॥२१
 दुःखिताः मिलिताः शीघ्रं ब्रह्माणं शरणं ययुः ॥२२
 मुनीशांस्तांस्तदा ब्रह्मा स्वयं प्रोवाच वै तदा ॥२३
 आराध्य गिरिजां देवीं प्रार्थयन्तु सुराः शिवम् ।
 योनिरूपा भवेच्चैद्वै तदा तस्मिन् स्थिरता ब्रजेत् ॥२४

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमेलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । आंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

जाता है । इन समस्त बातों का शिवपुराण में सविस्तार वर्णन है । इसी प्रकार पद्मपुराण पष्ठ उत्तर खंड अ० २५५ में लिखा है- भृगु ऋषि को आता देखकर भी शिव जी पार्वती के संग मत्त रहे अतः भृगु ने उन्हें शाप दिया .—

नारी संगममत्तो ऽसौ यस्मात्सामवमन्यते ।

योनिलिङ्ग स्वरूप वै तस्मात्तस्य भविष्यति ॥

तुमने स्त्री के संग मत्त रहकर मेरा अपमान किया है, इस लिये तुम्हारा स्वरूप योनिलिङ्ग हो जाय ।

भविष्यपुराण प्रति० खं० ४ अ० १७ में इस सम्बन्ध में एक दूसरी कथा आती है —

कदाचिद्भवानत्रिर्गंगाकूले ऽनसूयया ॥ ६७

तस्य भावं समालोक्य त्रयो देवाः सनातनाः ।

अनसूयां तस्य पत्नीं समागम्य वचोऽब्रुवन् ॥ ७०

लिङ्गहस्तः स्वयं रुद्रो विष्णुस्तद्रसवर्द्धनः ।

ब्रह्मा काम ब्रह्मलोपः स्थितस्तस्यावशं गतः ॥ ७१

मोहितास्तत्र ते देवा गृहीत्वा ता वलात्तदा ।

मैथुनाय समुद्योगं चक्रुर्मायाविमोहिताः ॥ ७३

तदा क्रुद्धा सती सा वै तान् शशाप मुनिप्रिया ।

महादेवस्य वै लिङ्गं ब्रह्मणोऽस्य महाशिरः ॥ ७४

चरणो वासुदेवस्य पूजनीया नरैः सदा ।

भविष्यन्ति सुरश्रेष्ठा उपहासोऽयमुत्तमः ॥ ७५

कभी भगवान् अत्रि अपनी पत्नी अनसूया सहित गंगा के किनारे रहते थे । ६७ । उसके भाव को देखकर तीनों सनातन देव उसकी पत्नी अनसूया को यह बात कहने लगे । ७० । हाथ में लिङ्ग लिये हुए महादेव . . . ब्रह्मा जी कामवश वेद का लोप करते हुए उस अनसूया के वश में होकर स्थित

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । आंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमेलक फल है। इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है। जिसे लंका के राजा ने बनवाया है। उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं। इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं। इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है। बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं। वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था। यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी। मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे। यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था। यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे। कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये। उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे। पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था। परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे। बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे। पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है। कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे। यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था। अध्र

मूर्तिपूजा और मुस्लिमकाल (१)

सातवीं शताब्दि के मध्य में अरब और उसके निकटवर्ती प्रदेश इस्लाम के प्रभाव में आ चुके थे । भारतवर्ष का अरब, ईरान तुर्किस्तान तथा मिश्र आदि देशों से अति प्राचीन काल से न केवल व्यापारिक किन्तु धार्मिक तथा सांस्कृतिक सम्बन्ध रहा है । अतः अरब आदि देशों के निवासियों का यहाँ सदा यातायात बना रहा । यहाँ के निवासी भी इन देशों में जाते रहे और अपने धार्मिक तथा सांस्कृतिक विचारों से उन्हें प्रभावित करते रहे । फलस्वरूप जिस समय यहाँ बौद्ध धर्म का प्रचार था, यह देश भी बौद्ध धर्म में दीक्षित हो गये । अरबी भाषा का 'बुद' तथा फारसी का 'बुत' शब्द जिसके अर्थ मूर्ति के हैं, 'बुद्ध' का ही रूपान्तर है । अरबी ग्रन्थों में बौद्धों के लिये 'समीना' 'समीनीने', 'शामनान' आदि अनेकों शब्दों का प्रयोग हुआ है तथा 'बोधि-सत्त्व' को 'बोजासफ़' लिखा है ।

इस्लाम के प्रचार के पश्चात् भी बौद्ध धर्म के चिन्ह अरब प्रदेशों में विद्यमान रहे, इस की अनेक साक्षियाँ मिलती हैं । आठवीं शती के प्रारम्भिक काल तक चलख में इनका एक अत्यन्त प्रभिन्न 'विहार' जिसे अरब ऐतिहासिकों ने 'नौ बहार' लिखा है 'नव-विहार' का ही अपभ्रंश है विद्यमान था, जिसके वैभव की इन्होंने बड़ी विशद व्याख्या की है । इसी के 'प्रमुख' भिक्षु, जिसे इन्होंने 'वरमक' लिखा है, के वंशज आगे

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमेलक फल है। इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है। जिसे लंका के राजा ने बनवाया है। उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं। इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं। इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है। बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं। वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था। यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी। मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे। यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था। यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे। कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये। उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे। पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था। परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे। बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे। पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है। कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे। यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था। अध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

कहना है कि कासिम का स्थान-स्थान पर बौद्धों ने स्वागत किया और उसे प्रत्येक प्रकार की सुविधा पहुँचाई । सिंध के एक व्यक्ति 'काका' के सम्बन्ध में, जिसे इसने एक सुप्रसिद्ध बुद्धिमान और नीतिज्ञ बताया है, लिखा है कि जब कुछ प्रतिष्ठित जाट सामन्त इसके पास गए और पूछा कि यदि उसका परामर्श हो तो कासिम की सेना पर रात को छापा मारा जाय ? उसने उत्तर दिया कि यदि तुम ऐसा करते हो तो करो, किंतु सुनो ! हमारे पण्डितों और योगियों ने ज्योतिष द्वारा यह भविष्यवाणी की है कि हमारे देश को एक दिन मुसलमान विजय कर लेंगे । लोग इन की बात नहीं मानते और हानि उठाते हैं । तुम जानते हो कि मैं सदा अपने निश्चय पर अटल रहने वाला हूँ । बौद्धों की पुस्तकों में भी यही भविष्यवाणी की गई है और मेरा भी यही निश्चय है कि वास्तव में ऐसा ही होने वाला है । तत्पश्चात् यह 'काका' मुहम्मद बिन कासिम के पास चला गया और जाट सामंतों के विचार से उसे सचेत कर दिया । उसने अपनी धार्मिक पुस्तकों की भविष्यवाणी का भी उससे वर्णन किया । कासिम ने उसका स्वागत किया और उसे अनेक बहुमूल्य पारितोषक भेंट किए । इसी प्रकार राजा दाहिर के ब्रह्म से विरोधी सेना-नायकों ने भी जाकर उसकी आधीनता स्वीकार कर ली । सम्भवतः यह काका वही देशद्रोही ब्राह्मण अथवा पुजारी था, जिसका अन्य इतिहासकारों ने कासिम से जा मिलने का उल्लेख किया है । यह है मुसलमानों द्वारा भारत को पराधीन करने वाले प्रथम युद्ध का सक्षिप्त विवरण, जिसके फलस्वरूप लगभग चौदह सौ वर्ष व्यतीत होने पर हमारे वंशन अब कहीं ढीले हुए हैं और वह भी मुसलमानों द्वारा इस देश को खण्ड-खण्ड करने के दुःसह परिणाम के पश्चात् ।

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमेलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अध्र

अन्य लेखक के आधार पर गुजरात के एक मन्दिर के अपार वैभव का उल्लेख करते हुए लिखा है—“गुजरात के राजा वल्लभराय की राजधानी महानगर के देव मंदिर में सोने, चाँदी, लोहे, पीतल, हाथीदाँत और हर प्रकार के बहुमूल्य पाषाण और मणियों की बीस हजार मूर्तियाँ हैं। उसकी एक मूर्ति चारह हाथ ऊँची स्वर्ण की है जो स्वर्ण के ही सिंहासन पर विराजमान है। यह सिंहासन एक गोलाकार ऊँचे स्वर्ण के भवन में स्थित है। यह भवन स्वच्छ मोतियों, लाल, हरे, पीले और नीले रंग के जवाहरात से सुसज्जित है। वर्ष में एक बार इसका मेला होता है। राजा स्वयं वहाँ पैदल आता जाता है। इस मूर्ति के सम्मुख वर्ष में एक दिन बलि दी जाती है और मनुष्य तक उस पर अपनी बलि चढ़ाते हैं।” अतः विदेशी मुसलमानों द्वारा इन मन्दिरों पर आक्रमण का कारण न केवल मूर्ति-ध्वंस द्वारा स्वर्ग प्राप्ति की लालसा ही थी, अपितु इन मन्दिरों का अपार वैभव भी उन्हें यहाँ खींच लाने का एक मुख्य कारण था। जिस छल कपट से पौराणिक साम्प्रदायिकों ने इसको संग्रह किया था, उमी भौँति वह उनसे अपहरण कर लिया गया। ईश्वर से विमुक्त होने के फल स्वरूप जो गतान्द्रियों तक मार खाई और अपमान सहन किये, वे प्रथक् रहे।

मुहम्मद बिन कासिम के भारत आक्रमण के लगभग तीसरी वर्ष पीछे गजनी के महमूद ने इसी लूट के लालच से इस देश पर धावा बोल दिया। इसने लगातार तीस वर्ष तक भारत पर सत्रह आक्रमण किये और समस्त पश्चिमोत्तर भारत को भस्मीभूत कर दिया। इसने नगरकोट के मन्दिर को विध्वंस करके इसमें ७०० मन सोने-चाँदी के वर्तन, ७४० मन सोना, २००० मन चाँदी और २० मन हीरे, मोती,

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

मन्दिर में अधर स्थित थी। शैव लोगों में मूर्ति के इस चमत्कार को बड़े कौतूहल की दृष्टि से देखा जाता था और भोली हिन्दू जाति के अन्धविश्वास और तत्कालीन आर्थिक वैभव से मन्दिर के पुजारी और उनके मंत्रदाक क्षत्रिय राजा पूर्ण लाभ उठाते थे। यह मूर्ति लोहे की बनी हुई थी। मन्दिर में ऊपर नीचे दोनों ओर चुम्बक पत्थर लगा हुआ था जिसके आकर्षण से यह मूर्ति अधर स्थित थी। महमूद गजनवी ने जब इसे तोड़ना चाहा तो पुजारियों ने उसे न तोड़ने की बड़ी अनुनय-विनय की और बदले में बहुत धन देने को भी कहा, किन्तु उसने उत्तर दिया कि मैं 'मूर्ति-भक्त' हूँ 'मूर्ति-विक्रेता' नहीं।

पुजारियों की इस प्रार्थना के दो कारण प्रतीत होते हैं। पहिला यह कि उस 'शिवलिङ्ग' के भीतर बहुमूल्य रत्न भरे हुए थे। दूसरा यह कि हमसे उनका समस्त चमत्कार जिसके आधार पर उनका यह व्यवसाय चल रहा था, धूल में मिल जाता था।

इन शिव भक्तों की इस शिवलिंग ने तनिक भी सहायता नहीं की। और एक अविश्वासी, बर्बर द्वारा क्षणभर में उसके खंड-खंड होगये। इससे तीन सौ वर्ष पूर्व मुहम्मद बिन काबिम के आक्रमण के समय 'देवी' भी अपने उपासकों की सहायक न हो सकी और न अपनी ही रक्षा कर सकी। पुनः तीन सौ वर्ष परचात् भारत प्रसिद्ध शिव मन्दिर को विध्वंस किया गया और शिवलिंग के खण्ड-खण्ड करके उस स्थान पर मस्जिद बना दी गई परन्तु इस बार भी शिव की समाधि भंग नहीं हुई। उपर्युक्त दोनों ही ऐतिहासिक घटनाएँ हैं, हमारी विलष्ट कल्पनाएँ नहीं। सोमनाथ, काशी, अयोध्या, तथा मथुरा आदि तीर्थ-स्थानों की वक्षस्थली पर देव मन्दिरों को विध्वंस करके उनकी जगह खड़ी हुई मस्जिदें आज भी मूर्तिपूजा की नि मारता तथा

उसे इस देश की पराधीनता का मुग्य तथा प्रचल कारण घोषित कर रही हैं । तत्कालीन भारत की राजनैतिक तथा सामाजिक अवस्था कितनी दयनीय थी, इनका वर्णन अरब का प्रसिद्ध यात्री अलबरूनी जो महमूद के आक्रमण के समय भारत में ही उपस्थित था, निम्न शब्दों में करता है :—

“भारत बहुत छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त है । सब राज्य स्वतंत्र हैं और परस्पर युद्ध में प्रवृत्त रहते हैं । ब्राह्मण अपने अधिकारों की रक्षा के लिये इतने व्याकुल हैं और जातिभेद का ऐसा द्वेषभाव फैल रहा है कि वैश्यों और शूद्रों को वेद-पाठ करते देखकर, ब्राह्मण उन पर तलवार लेकर दूट पड़ते हैं । और उन्हें राजकुचहरी में उपस्थित करते हैं, जहाँ उनकी जिह्वा काट ली जाती है । ब्राह्मण सब प्रकार के राज्य-कर से मुक्त हैं । हिंदू बालाएँ सुती हो जाती हैं । हिंदू किसी देश को नहीं जाते, किसी जाति को श्रद्धा की दृष्टि से नहीं देखते । वे अपने को और अपनी जाति को सर्वश्रेष्ठ समझते हैं ।”

परन्तु अन्त में इन ब्राह्मण और क्षत्रियों को भी अपने इन पापों का फल भोगना पड़ा । वे भी गजनी के बाजारों में दो-दो रुपये को बिके !

महमूद गजनवी के लगभग १५० वर्ष पश्चात् १२ वीं शती में मुहम्मद गौरी ने भारत पर आक्रमण किया । पृथ्वीराज ने बढ़कर उसे परास्त किया और उसे बंदी कर लिया परन्तु कुछ वंद लेकर छोड़ दिया । छः बार उसने आक्रमण किये और हार कर बंदी हुआ और धन लेकर छोड़ दिया गया । पृथ्वीराज और जयचन्द्र के पारस्परिक युद्ध ने मुहम्मद गौरी को फिर एक बार भारत पर आक्रमण करने का अवसर दिया । जयचन्द्र ने पृथ्वीराज से परास्त होकर मुहम्मद गौरी को भारत पर आक्रमण

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमेलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

त्कारों के आधार पर देशों को सहस्रां वर्षों तक लूटा गया, न जाने इन मूर्तियों की दैवी शक्ति उम्र समय जब मुसलमानों ने उन्हें खण्ड-खण्ड करके मस्जिदों की सीढ़ियों तक में लगाया, कहीं विलुप्त हो गई ! आज भी वही मूर्तियाँ हर प्रकार के चमत्कारों से शून्य हैं ।

मूर्तिपूजा और उसके उपरिणामों का चित्रण जो कुछ तत्कालीन अरब यात्रियों और विद्वान् लेखकों ने किया है और जो अब भी उपलब्ध है उसे संक्षेप में हम यहाँ उद्धृत करते हैं—

इब्ननदीम ने अनेक प्रकार की मूर्तियों और उनकी आकृतियों का वर्णन किया है । यहाँ उसने काली के चार हाथ, नीला रङ्ग, दाँत निकले हुए, पीठ पर हाथों की खाल जिसमें खून की बूँदें टपकती हैं, शिर पर खोपड़ियों का ताज और ऊर्ध्व की गले में माला देखी । सूर्य की मूर्ति का वर्णन करते हुए वह लिखता है कि एक गाड़ी में चार घोड़े जुते हैं, एक पर मूर्ति है । उसके भक्त उसको दण्डवत् करते हैं, चारों ओर घूमते हैं, धूप जलाते हैं और वाजा बजाते हैं । मन्दिर से बहुत भी जायदाद लगी है और बहुत से पुजारी हैं जो इस मन्दिर और जायदाद का प्रबन्ध करते हैं । चन्द्रमा की मूर्ति का रथ चार बत्तों (हसों) वाला बताया है । मूर्ति के हाथ में एक बहुत बड़ा लाल होता है, जिसे चन्द्रकेतु कहते हैं । शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को इसकी पूजा होती है । गङ्गा के माहात्म्य का भी इसने वर्णन किया है ।

दूसरा लेखक मुस्लिम महतर (दशम शताब्दि) महादेव, काली, महाकाली और लिङ्ग पूजा का वर्णन करता है । इसने अग्निहोत्री और योगियों का भी अपनी पुस्तक में उल्लेख किया है । ब्राह्मणों के सम्वन्ध में लिखा है कि ये गाय की पूजा करते हैं, गङ्गा से पार जाना पाप समझते हैं और किसी दूसरे

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमेलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । आंध्र

कहा—“आप जानते हैं कि हिन्दुस्तान के आदमी मूर्तिपूजक हैं और सूर्य की पूजा करने वाले काफिर हैं। खुदा और रमूलेखुदा की आज्ञा है कि ऐसे काफिरों को कत्ल करो। मेरा विचार हिन्दुस्तान पर जहाद की चढ़ाई करने का है। इस पर सब लोग ‘आमीन अल्लाह’ चिल्ला उठे और १३८६ ई० में उसने भारत पर आक्रमण किया। यह जहाँ होकर जाता नगरों ग्रामों को लूटता, उनमें आग लगाता, निरपराध नर-नारियों को कत्ल करता और बन्दी बनाता था। भटनेर में उसने एक घन्टे में दश सहस्र हिन्दुओं को मरवा डाला। दिल्ली पहुँचते-पहुँचते उसके पास दो लाख बन्दी होगये। अतः उसने आज्ञा दी कि पन्द्रह वर्ष से अधिक आयु वाले स्त्री-पुरुष कैदी कत्ल करा दिये जायें ऐसा ही किया गया। रक्त की नदी बहने लगी। पाँच दिन तक देहली में लूट, नरहत्या, सतीत्व नाश का अखण्ड राज्य रहा। लाखों हिन्दू मार डाले गये। दिल्ली से मेरठ पर आक्रमण किया और पचास हजार स्त्री-पुरुष कत्ल कर दिये और असंख्य जवान स्त्री-बच्चे बन्दी बना लिये गये। प्रत्येक सैनिक के पास बीस से सौ तक कैदी आये। यहाँ से वह हरिद्वार गया। वहाँ एक पर्व था, यात्रियों की बड़ी भीड़ थी। मेले में उसने कत्ले आम की आज्ञा देदी। गङ्गा का जल रक्त से लाल होगया। मन्दिरों की क्या दुर्दशा हुई होगी इसका पाठक स्वयं अनुमान लगाएँ। वह लूट मार करके काबुल लौट गया। वह वहाँ से इतना धन लेगया कि ८ वर्ष तक उसकी सेना को समय से पूर्व ही वेतन प्राप्त हो जाता था।

अब समस्त उत्तर-पश्चिमी भारत मुसलमानों के आधीन था। हिन्दू जाति नष्टप्रायः हो चुकी थी। उसमें प्रतिरोध शक्ति का सर्वथा अभाव था। जहाँ एक-एक सैनिक जिस जाति के

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमेलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । आंध्र

हिन्दुओं को कत्ल कर दिया । औरङ्गजेब की बनाई मस्जिद आज भी ठीक मथुरा के बीचों बीच विद्यमान है । इसने प्रत्येक प्रान्त के शासक को आज्ञा पत्र भेजा कि समस्त मन्दिर ढहा दिये जायँ, मूर्तियाँ तोड़ दी जायँ, और पाठशालायें बन्द कर दी जायँ । कुरुक्षेत्र के मेले में जाकर लाखों हिन्दुओं को इसने अकारण ही कत्ल कर दिया । हिन्दुओं से इसने जजिया लेना भी फिर से प्रारम्भ कर दिया । इस तरह कुछ समय की शान्ति के पश्चात् हिन्दुओं का पुनः विनाश होने लगा ।

औरङ्गजेब के अत्याचार से फिर एक बार हिन्दू जुन्म हो गये और लगभग पाँच सौ वर्षों तक घोर अत्याचार सहन करने के पश्चात् मुस्लिम शक्ति के विरुद्ध उठ खड़े हुए । पञ्जाब में गुरु गोविन्दसिंह, और दक्षिण में शिवाजी ने सैनिक शक्ति संगठित करके औरङ्गजेब का विरोध करना प्रारम्भ कर दिया । अन्त में औरङ्गजेब घुड़घात होकर लड़ते-लड़ते दक्षिण में मर गया । और इस प्रकार मुगल साम्राज्य भी विनाश की ओर अग्रसर होने लगा ।

औरङ्गजेब के उत्तराधिकारियों ने प्रजा को सन्तुष्ट करने की चेष्टा की किन्तु सब विफल हुई । सिक्खों ने पश्चिमोत्तर भारत पर अधिकार कर लिया । मध्य और दक्षिण भारत में राजपूत और मराठों ने अपना आधिपत्य जमा लिया और मुगल राज्य केवल दिल्ली के इर्द गिर्द ही रह गया । हिन्दुओं को फिर एक बार सङ्गठित होकर स्वाधीन होने का अवसर मिला किन्तु इनकी आन्तरिक विभिन्नतायें जिनसे वे आज भी मुक्त नहीं हैं, इनके मार्ग में चट्टान बनकर आ खड़ी हुई और वे जहाँ के तहाँ ही रह गये ।

सातवीं शताब्दि के प्रारम्भ से लेकर सत्तरहवीं शताब्दि

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमेलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । आंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमेलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमेलक फल है। इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है। जिसे लंका के राजा ने बनवाया है। उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं। इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं। इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है। बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं। वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था। यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी। मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे। यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था। यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे। कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये। उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे। पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था। परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे। बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे। पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है। कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे। यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था। आंध्र

धीरे ईसाई धर्म से प्रभावित होने लगा । बहुत से युवक ईसाई हो गये और बहुत से ईसाई धर्म की विशेषता और हिन्दू धर्म, जो केवल पौराणिक रूढ़ियों का एक पिंजरमात्र था, की हेयता का अनुभव करते थे । पौराणिक धर्म का सबसे निर्वल मर्मस्थान मूर्तिपूजा ही इन पादरियों का प्रहार केन्द्र था ।

बङ्गाल के सुप्रसिद्ध सुधारक राजा राममोहन राय ने इस य नई आपत्ति का अनुभव किया और ब्रह्म समाज की स्थापना की । उन्होंने हिन्दू जाति को मूर्तिपूजा के अन्ध विश्वास से निकालने का भरसक प्रयत्न किया । राजा राममोहन राय अरबी, अंग्रेजी और संस्कृत के अच्छे पण्डित थे । उन्होंने अपने लेखों में मूर्तिपूजा का विद्वत्तापूर्ण एवं युक्तियुक्त खण्डन किया है । उनके तत्संबंधी अनेक उद्धरण न देकर हम केवल दो, पाठकों के अवलोकनार्थ उपस्थित करते हैं, —

Many learned Brahmins are perfectly aware of the absurdity of idolatry, and are well informed of the nature of the purer mode of divine worship. But as in the rites, ceremonies, and festivals of idolatry, they find the source of comforts and fortunes, they not only never fail to protect idol worship from all attacks, but even advance and encourage it in the utmost of their power, by keeping the knowledge of their scriptures concealed from the rest of the people. Their followers too, confiding in these leaders, feel gratification in the idea of the Divine Nature residing in a being resembling themselves in birth, shape and propensities, and are naturally delighted with

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

perversian of it, and I endeavoured to show that the idolatry of the Brahmins was contrary to the practice of their ancestors and the principles of the ancient book and authorities which they profess to revere and obey."

“मैंने अपने समस्त विवादों में ब्राह्मण धर्म का विरोध नहीं किया, अपितु उसके विपरीत यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया कि ब्राह्मण धर्म की मूर्तिपूजा, उनके पूर्वजों, प्राचीन धर्म ग्रन्थ एवं उन प्रमाणों के विपरीत है, जिन्हें वे अपने लिये मान्य और आदरणीय समझते हैं।”

राजा राममोहन राय के पश्चात् ब्रह्मसमाज और उसके नेताओं ने बङ्गाल प्रान्त में अन्ध सुधार कार्य किया। परन्तु राजा राममोहन राय के उत्तराधिकारी ब्रह्मसमाज के नेता नव आगन्तुक ईसाई धर्म और पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव से न बच सके। फलतः ब्रह्मसमाज विशुद्ध भारतीय संस्कृति का पोषक न रहकर पाश्चात्य सभ्यता के प्रवाह में बह गया और वह बङ्गाल से आगे न बढ़ सका।

महामान्य गोविन्द रानाडे के प्रार्थना समाज ने भी महाराष्ट्र में मूर्तिपूजा के विरुद्ध प्रशंसनीय कार्य किया किन्तु उसकी दशा भी बहुत कुछ ब्रह्म समाज की सी ही होकर रह गई।

वह भी बम्बई प्रान्त के अंग्रेजी शिक्षित समुदाय तक सीमित रहा और आज उसका नाम भी सुनने में नहीं आता। ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज दोनों ने ही हिन्दू युवकों को ईसाई धर्म के बढ़ते हुए प्रभाव से रक्षा करने में सराहनीय कार्य किया। उसके लिये हिन्दू जाति, इन दोनों महापुरुषों की सदा आभारी रहेगी।

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमेलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमेलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिठनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । आंध्र

दयानंद को परास्त करके उनके हाथों अपनी मूर्ति को भोग
 लगवा देगा या स्वयं पराजित होकर उनका मत ग्रहण कर
 लेगा । कई दिन तक शास्त्रार्थ होता रहा । अंत में पण्डित
 ने अपनी पराजय स्वीकार करली और मूर्तियों को गङ्गा
 में बहा दिया । स्वामी दयानंद के मूर्तिपूजा-खण्डन से
 प्रभावित होकर अनेक स्थानों पर लोगों ने अपनी अपनी
 देव मूर्तियों को गङ्गा में प्रवाहित कर दिया । स्वामी दयानंद
 को अनेक प्रलोभन दिये गये कि यदि वह मूर्तिपूजा का
 खण्डन न करें तो उनको अमुक मठ की गद्दी दे दी
 जायगी अथवा उनको समस्त हिन्दू जनता अपना सर्वमान्य
 नेता स्वीकार कर लेगी । किंतु उनका सदा यही उत्तर
 रहा कि, “ मैं तुम्हारी इच्छा-पूर्ति करूँ अथवा ईश्वरीय
 आज्ञा का पालन ? ” उन पर अनेक बार आक्रमण किये गये,
 कई बार विप दिया गया, बहुत प्रकार की धमकियाँ दी गईं
 किंतु उन्होंने मूर्ति-पूजा के खंडन में कोई समझौता नहीं
 किया । पादरी के० जे० लूस ने जिसने स्वामी दयानंद के
 व्याख्यान सन् १८७७ ई० में फरुखाबाद में सुने थे और उन
 में भेंट भी की थी, बतलाया कि “ वह मूर्ति-पूजा के विरुद्ध
 इतने बल, इतने शस्त्र और विश्वास के साथ बोलते थे कि
 मुझे फरुखाबाद की जनता की ओर से उनका हार्दिक स्वागत
 किये जाने पर आश्चर्य हुआ । मुझे उनका यह कथन स्मरण है
 कि जब मैंने उनसे कहा कि यदि आपको तोप के मुँह पर रख
 कर आपसे कहा जाय कि यदि तुम मूर्ति को मस्तक न झुकाओगे
 तो तुमको तोप से उड़ा दिया जायगा. तो आप क्या कहेंगे ?
 स्वामी ने उत्तर दिया था कि मैं कहूँगा कि उड़ा दो । ”
 दयानंद अपने निर्भीक थे कि अनेकों मन्दिरों में ठहरते हुए

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अध्र

मृत्तिका के संयोग होने से मोरी वा कुंड में आकर सड़के इतना उस से दुर्गन्ध आकाश में चढ़ता है कि जितना मनुष्य के मल का और सहस्रों जीव उसमें पड़ते उसी में मरते और सड़ते हैं। ऐसे ऐसे अनेक मूर्तिपूजा के करने में दोष आते हैं। इसलिये सर्वथा पापाणादि की मूर्तिपूजा सज्जन लोगों को त्यक्तव्य है। और जिन्होंने पापाणमय मूर्ति की पूजा की है करते हैं, और करेंगे, वे पूर्वोक्त दोषों से न बचें, न बचते हैं और न बचेंगे।

सम्भव है कि उपर्युक्त सूची को देखकर कुछ पाठक स्वामी दयानन्द पर अत्युक्ति का दोषारोपण करें। परन्तु जिन्हें बड़े बड़े तीर्थ स्थानों और उनके देव मन्दिरों की आंतरिक अवस्था का परिज्ञान है, वे ऐसा कभी न करेंगे। स्वामी दयानन्द ने इस देश के मठ मन्दिरों की आंतरिक अवस्था को अपनी आंखों देखा था, अतः मूर्तिपूजा से होने वाली जिन हानियों को उन्होंने यहाँ गिनाया है उनमें कोई अत्युक्ति नहीं है। स्वामी जी ने मूर्तिपूजा के विरुद्ध इतना कहा और लिखा है कि यदि हम उनका समग्र करने लगें तो एक स्वतंत्र ग्रन्थ की रचना हो सकती है, इसलिये हम विस्तार भय से अधिक उद्धरण न देकर पाठकों से प्रार्थना करेंगे कि जो हम समग्र ग्रन्थ में जानना चाहें वे स्वामी दयानन्द द्वारा रचरचित ग्रन्थ 'संयार्थप्रकाश,' 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' में देखें। उनके अनेक जीवन वृत्तान्तों से भी इस विषय पर पर्याप्त प्रकाश मिल सकता है।

इस देश में स्वामी दयानन्द ने पूर्व किसी भी आचार्य ने मूर्तिपूजा के विरुद्ध इतने खुले ढंग से कभी आन्दोलन नहीं किया। और न उमसे होने वाली हानियों को इतने स्पष्ट रूप में सर्वनाधारण के समुग्र रखने का प्रयत्न किया। शंकर और

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमेलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । आंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

महात्मा गांधी की विचार-धारा बहुत से संतों की भांति, “सब ही धर्म ईश्वर-प्राप्ति के साधन हैं और ठीक हैं” रही। अतः एव उन्होंने कभी किसी विवादास्पद धार्मिक विषय पर अपनी निर्भीक सम्मति नहीं दी। इस विचार धारा का अनुयायी दे भी नहीं सकता। इस विचार ने हिन्दू-जाति के जीवन पर एक घातक प्रभाव डाला है। जब संसार के साधारण धर्म अपने प्रचार की प्रगति से महान् शक्तिशाली बन गये, हिन्दू धर्म (वैदिक धर्म) केवल कूपमंडूक ही रहा और वह अपने अमर संदेश को दूसरे देशों तक न पहुँचा सका। बौद्धकाल तक यहाँ के प्रचारक अपने धर्म, संस्कृति और सभ्यता की दुन्दुभी विश्व में बजाते रहे। उन्होंने विश्व को आर्य बनाने की वैदिक लोकोक्ति को नहीं मुलाया था।

महात्मा जी स्वयं मूर्तिपूजक नहीं थे और न उनका उस पर विश्वास था, परंतु वह उसे पाप नहीं समझते थे। जैसा कि हम पूर्व लिख चुके हैं, उनके धार्मिक विचार अस्थिर थे और समय समय पर बदलते भी रहते थे। इसे उन्होंने अपने वक्तव्यों और लेखों में स्वयं स्वीकार किया है। मूर्तिपूजा पर उन्होंने अपनी जो अन्तिम सम्मति प्रकट की है, हम अधिक न लिखकर उसे ही लिख देना पर्याप्त समझते हैं। वह लिखते हैं :—

“एक भाई ने मुझे अखबार की एक कतरन भेजी है। उसमें खबर है कि मेरे नाम का एक मंदिर बनवाया गया है। और उसमें मेरी मूर्ति की पूजा की जाती है। इसे मैं मूर्तिपूजा का वेढझा रूप समझता हूँ। जिसने यह मंदिर बनवाया है, - उसने अपने पैसे बर्बाद किये हैं, गांव के भोले लोगों को गलत रास्ता दिखाया, और मेरे जीवन का गलत स्वाका खींच कर मेरा अपमान किया। इससे मूर्तिपूजा का अर्थ सिद्ध नहीं होता, उल्टे अनर्थ होता है। अपने गुजारे के लिये या स्वराज्य के लिए यज्ञ

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमेलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अर्ध

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमेलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अर्ध

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमेलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । आंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । आंध्र

अपना निवासस्थान बना लिया है अन्यथा वहाँ के निवासी मूर्ति-पूजा में जीविका के लिए विश्वास करते हैं। दूरदेशस्थ प्रान्तों से आये हुए यात्रियों को मूर्तियों के चमत्कार की अनेक कल्पित गाथायें सुनाकर उन्हें प्रभावित तथा भयभीत करना और बहुप्रकार के दंभ और आढम्बर दिखाकर उनकी जेब को अन्तिम पाई तक खाली करा लेना ही इनका मुख्य व्यवसाय है। कभी तो यहाँ के पण्डे इन यात्रियों के पास इतना धन भी नहीं छोड़ते कि वे घर भी लौटकर जा सकें। अन्त में पण्डे ही इन्हे ऋण देकर व्याज सहित उनसे उसे अपहरण करते हैं। स्त्रियाँ जो प्रायः अधिक भावुक होती हैं, इनसे बुरी तरह लूटी जाती हैं। उनके चाँदी-सोने के आभूषण तक उतरवा कर यह मूर्तियों के अर्पण करा देते हैं। इन यात्रियों की धर्मभीरुता का यह लोग कितना दुरुपयोग करते हैं, उसका ठीक अनुमान देखकर ही लगाया जा सकता है। उन स्थानों पर होने वाला परस्त्रीगमनादि व्यभिचार अब कोई छिपी बात नहीं है। इन दुष्कृत्यों के लिये मन्दिरों के न केवल साधारण पण्डे-पुजारी ही, अपितु बड़े-बड़े महन्त तक ख्याति लाभ कर चुके हैं। बम्बई का महाराज (वैष्णव संप्रदाय का एक प्रमुख महन्त) लाइविल-केस, कलकत्ते के गोविन्द-भवन की गूँज और श्रीनाथ जी के मन्दिर के महन्त दामोदर लाल हंसा प्रेम—जैसी न जाने कितनी घटनाएँ घटीं, और आज भी इन देवमूर्तियों की आड़ में घटती रहती है।

मूर्तिपूजा पर देश का कितना धन पानी की भांति बहाया जाता है इसका अनुमान करना भी कठिन है। मन्दिर-निर्माण पर अरबों-खरबों का व्यय किया गया है। जिनकी बनावट इस ढङ्ग की है कि उनका कोई दूसरा सदुपयोग असंभव है। अन्ध-कार युक्त कोठे-कोठरी, जिनमें दिन में भी दीपक के प्रकाश की

मूर्तिपूजा और योगसाधन

योगसाधन ही ईश्वर प्राप्ति की एकमात्र विधि है। अन्य प्रचलित विधियाँ उसका एक अङ्ग हो सकती हैं, सर्वाङ्ग नहीं। संसार में ईश्वर-उपासना की जो विधियाँ प्रचलित हैं, उनमें से बहुत सी किसी न किसी अंश में उसकी ऋणी हैं, किन्तु अपूर्ण हैं। इस विधि को समझने के लिये उसका संक्षिप्त परिचय यहाँ अनुचित न होगा। पतञ्जलि मुनि ने अपने संसार प्रसिद्ध योग-दर्शन में, 'योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः'—चित्त की वृत्तियों का निरोध अर्थात् वश में रखना योग है—ऐसा लिखा है। "यमनियम आसन प्राणायाम प्रत्याहार धारणा ध्यान समाधयोऽष्टावङ्गानि"—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि यह आठ अङ्ग योग के वर्णन किये हैं।

"अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः"—अहिंसा, सत्य, अस्तेय (चोरी त्याग) ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह (निर्लिप्तता) यम हैं। "शौचसन्तोषतपः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः"—शौच, (पवित्रता) सन्तोष, तप, स्वाध्याय तथा ईश्वर-प्रणिधान (ईश्वरार्पण) नियम हैं। शेष छः अङ्ग—आसन (सुखपूर्वक शरीर को एक अवस्था में स्थिर रखना, प्राणायाम (प्राण को वश में रखने की विधि) प्रत्याहार (इन्द्रिय निग्रह) धारणा (मन की एक स्थान पर स्थिरता) ध्यान (मन का स्थिर होकर निर्विषय होजाना) समाधि (ईश्वर चिन्तन में निमग्न हो जाना) हैं।

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

हमें उस विषय में प्राप्त नहीं होता अपितु उसका मूल स्रोत चित्त की एकाग्रता है परन्तु यह चित्त की एकाग्रता भी स्थायी सुख का कारण नहीं है। स्थायी सुख तथा आनन्द का स्रोत तो परमात्मा है। अतः जब तक मनुष्य का चित्त प्राकृतिक पदार्थों में उलझा रहगा, चाहे वे योग की सिद्धियाँ ही क्यों न हों आनन्द की प्राप्ति नहीं हो सकती। इसीलिए इन सिद्धियों को भी परमात्मा की प्राप्ति में बाधक बताया है। जब यह सिद्धियाँ ही बाधक हैं तो मूर्तिपूजा का तो उसमें सम्बन्ध ही क्या ? 'मूर्ति' की योगदर्शन के किसी भी प्राचीन भाष्यकार ने धारणा की जाने वाली वस्तुआ में गणना नहीं की और न मूर्तिपूजा की ओर कहीं मद्धेतु ही किया है। यह तो एक ऐसी कल्पना है जिसके लिए न कोई युक्ति है, और न प्रमाण।

संसार में यदि आज योग - साधन - विधि विलुप्त हो गई है, तो उसका समस्त उत्तरदायित्व मूर्तिपूजा और उसके प्रचारकों पर है। यदि आज मानव समाज ईश्वरविमुख होकर सामाजिक भोग विलास के प्रभाव में बहा जा रहा है तो इसके लिए वे उत्तरदाता हैं, जिन्होंने योग-विज्ञान पर अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए कुठाराघात किया। हमने यदि इस अप्रद्वि विज्ञान के तिलाञ्जलि न दी होती तो आज संसार का चित्र ही दूसरा होता। पश्चिम के लोग आज भी योग के नाम पर सुख है। अमेरिका के लिए इस भौतिक युग के चक्राचौध में भी योग' शब्द विशेष आकर्षण रखता है। किन्तु आज 'योग विधि' अपनी जन्म भूमि भारत में ही विलुप्त हो चुकी है। तब उन देशों को उसका क्रिया मन्त्र सन्देश दे तो कौन दे ? मूर्ति चित्त को एकाग्र करने का साधन नहीं हो सकती, इस पर आद्य मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी विचार करते। मन अपनी चञ्चलता के कारण अस्थिर रूप में इधर-उधर घूमता रहता है। हमकी इस चञ्चलता को

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । आंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

है। किन्तु मन्दिरों में आप ऐसे लोगों को ठीक उसी ढङ्ग में जों कि सर्व साधारण की विधि है—पूजा करते पायेंगे। उनका समस्त तर्क-वितर्क केवल बाणी तक ही सीमित है, कार्यरूप में उनमें और साधारण मूर्तिपूजक में आप कोई अन्तर नहीं देखेंगे। इन लोगों का कार्य ठाली बैठे युक्तियों का ताना-बाना बुनना ही है, जिनके द्वारा यह मूर्तिपूजा को एक दार्शनिक रूप देने का असफल प्रयत्न किया करते हैं।

उपयुक्त कोटि में कुछ ऐसे भी व्यक्ति हैं, जों मूर्तिपूजा के दोषों को भली भाँति समझते हुए भी स्वार्थवश उसके रक्षार्थ ऐसी अर्थहीन युक्तियाँ प्रस्तुत किया करते हैं। और कभी-कभी उसे स्वीकार भी कर लेते हैं, किन्तु जीविका के कारण विवश है। ऐसी ही युक्तियों पर यहाँ इस अध्याय में विचार किया जायगा।

(१)

“ईश्वर अनन्त है और हम मान्त है। सान्त जीव अनन्त परमात्मा के वास्तविक स्वरूप को समझने में अशक्त है। मूर्ति द्वारा हम उसे एक सीमित कोटि में ले आते हैं जिससे हमें उसका कुछ आभास हो सके।”

जो परमात्मा अनन्त है वह सदा अनन्त ही रहेगा उसे मूर्ति में परिमित करने की कल्पना ही हास्यास्पद है। जो वस्तु जैसी है उसे वैसी मानना और जानना ज्ञान है। उसमें भिन्न विपरीत अज्ञान है। उपासना का अर्थ ही उस अनन्त की खोज है। मूर्ति द्वारा हम मूर्ति का ही ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं जो हमारे समक्ष है, उस अनन्त परमात्मा का नहीं। यह समझ लेना कि मूर्ति द्वारा हम उस अनन्त का साक्षात् करते हैं, एक भ्रम है। फिर एक मूर्तिपूजक सदा मूर्तिपूजक रहता है, आज तक किसी को भी एक पग आगे बढ़ते नहीं देखा।

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमेलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । आंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमेलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । आंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

बनाकर उनकी पूजा करते हैं ।” इस सम्बन्ध में ‘मूर्ति पूजा और योग साधन’ अध्याय में बहुत कुछ लिखा जा चुका है । यह भावना सर्वथा निराकार और अमल्य है कि मन निराकार में स्थिर नहीं हो सकता, अतएव उसके लिये साकार मूर्ति की आवश्यकता है । समस्त साकार पदार्थ रूप, रस, शब्द, स्पर्श, गन्ध विषययुक्त होते हैं । और मन की चञ्चलता का कारण भी यही विषय होते हैं, यदि साकार पदार्थ में मन स्थिर होना तो संसार में सब ही का मन स्थिर होगया होता । क्योंकि समस्त संसार ही साकार है । परन्तु इसके विपरीत ज्यों-ज्यों मनुष्य सामारिक पदार्थों में फँस जाता है वैसे ही वैसे इसके मन की चञ्चलता बढ़ती जाती है । मन की चञ्चलता तो उस समय दूर होती है कि जब वह निर्विषय होकर ईश्वर का चिन्तन करता है । अतः मूर्ति कभी भी मन स्थिर करने का साधन नहीं हो सकती । मूर्तिपूजक मूर्ति में सब ही विषयों की कल्पना करते हैं । रूप तो उसमें पार्थिव भाग होने के कारण विद्यमान है ही । जब उसका भोग लगाया जाता है तो ‘रस’ की भी कल्पना कर ही लो । पुष्प चढ़ाना और धूप देने के अर्थ उसमें गन्ध शक्ति को स्वीकार करना है । मूर्ति के हाथ जोड़ना, माष्टाङ्ग दण्डवत् करना तथा उसकी स्तुति प्रार्थना यह सिद्ध करने के लिये पर्याप्त है कि उसके उपासक यह समझते हैं कि वह उनकी इस समस्त क्रिया कलाय को देखती और सुनती है अतएव एक ऐसी वस्तु जिसमें सभी विषयों की कल्पना करली गई है मन को एकाग्र करने का साधन कैसे हो सकती है ?

राम और कृष्णादि महान् पुरुष जिनको लोग मूल से ईश्वरावतार समझते हैं, जब जीवित थे तो स्वयं मन्त्र्या-चन्द्रना द्वारा निराकार परमात्मा की उपासना करते थे । वे अपने निकट रहने वाले बन्धु-बान्धवों की मानसिक चञ्चलता को दूर करने में

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमेलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

दोनों विद्यमान हैं। मूर्ति में परमात्मा अवश्य है किन्तु उपासक का जीवात्मा नहीं। ऐसा स्थान जहाँ जीव और ब्रह्म दोनों ही उपस्थित हों केवल मनुष्य का हृदय है। इसी हृदय मन्दिर में जीव उस ब्रह्म का साक्षात् कर सकता है। वेद और उपनिषद् इसी सत्य का निरूपण करते हैं।

वेतस्तत्पश्यन् मनसा गुहायाम् । यजु० ३२ । ८

विद्वान् पुरुष परमात्मा को हृदय में देखते हैं।

तमात्मस्थमनुपश्यन्ति धीरास्तेषां सुखंशाश्वतं नेतरंपाम् । १२
पञ्चम वल्ली कठोपनिषद् ।

जो धीर पुरुष जीवात्मा में स्थित परमात्मा को देखते हैं उनको चिरकाल तक रहने वाला सुख प्राप्त होता है, अन्यो को नहीं।

(६)

विद्वान् और ज्ञानियों के लिये चाहे मूर्ति पूजा की उपयुक्तता न हो परन्तु जन साधारण के लिए उसकी आवश्यकता है। पाश्चात्य शिक्षा एवं सभ्यता के प्रसार से शिक्षित हिन्दू युवक वैसे ही ईश्वर और धर्म से विमुख होता चला जा रहा है। यदि मूर्ति पूजा और मन्दिरों को हटा दिया गया तो हिन्दुओं की ईश्वर और धर्म में अवशिष्ट श्रद्धा और भी नष्ट हो जायगी और लोग नास्तिक बन जायेंगे। अतः मूर्तिपूजा को जीवित रहने देने की आवश्यकता है 'न होने से कुछ होना अच्छा है।'।

मूर्ति पूजा को जन साधारण के लिये उपयुक्त बनाना और उसके लिए उसे जीवित रखने की युक्ति एक उल्टी बात है। मूर्ख को शिक्षा न देकर मूर्ख ही रखना एवं रोग की चिकित्सा न करके उसे बनाए रखने का प्रयत्न यदि उचित है तो इस युक्ति का भी औचित्य स्वीकार किया जा सकता है। जनसाधारण में धार्मिक

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

मूर्ति, शिवलिङ्ग की लज्जामय आकृति भय और लज्जा के अतिरिक्त क्या कभी श्रद्धा और भक्ति के भाव उत्पन्न कर सकेगी ? अतः ये हमारे मस्कार हैं, जो एक मूर्ति अथवा मन्दिर को देख कर हमारे अन्दर श्रद्धा और भक्ति का भाव उत्पन्न करते हैं ।

(६)

“मूर्तिपूजा अपने महान् पूर्वजों की पूजा है । क्या महा-पुरुषों की पूजा भी पाप है ? सभी जातियाँ अपने पूर्व महा-पुरुषों की किसी न किसी रूप में पूजा करती हैं । मुसलमान और ईसाइयों में भी इस प्रकार की पूजा प्रचलित है । इससे सिद्ध है कि मूर्ति पूजा मनुष्य के हृदय में बीजरूप से विद्यमान है, और उसे उससे सर्वथा दूर नहीं किया जा सकता ।”

इस पर विचार करने से पूर्व मूर्ति और पूजा इन दो शब्दों को भली भाँति समझ लेना चाहिए । आकार व शरीर वाली वस्तु को मूर्ति कहते हैं । उसके दो प्रकार हैं—जड़ या चेतन समस्त जीवधारों चेतन मूर्तियाँ हैं और चेतना रहित जड़ पदार्थ जड़ मूर्तियाँ हैं । पूजा का अर्थ आदर—सत्कार है । व्यावहारिक रूप में इसके अर्थ उचित व्यवहार और रक्षा के भी हैं । अतः जब हम यह कहते हैं कि माता, पिता, गुरु आदि हमारे पूज्य हैं, अथवा हमें उनकी पूजा करनी चाहिए, तो इसका अभिप्राय उनकी अन्न जल वस्त्रादि से सन्तुष्टि तथा सेवा-सुश्रूषा एवं आज्ञापालन द्वारा उन्हें सुखी रखना है । किन्तु एक जड़ वस्तु की पूजा उनकी उचित रक्षा एवं व्यवहार ही है, उसके हाथ जोड़ना, स्तुति करना अथवा भोग लगाना नहीं, क्योंकि न वह सुनती है, और न खाती है । इसलिए एक मूर्ति की चेतन की भाँति पूजा करना एक ज्ञानशून्य कृत्य है । हिन्दू गङ्गा नदी की आरती उतारते हैं, स्तुति करते हैं,

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमेलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । आंध्र

पूर्वजों की कब्रा पर स्तुति और प्रार्थना करते हैं। परन्तु यह सब कुछ होते हुए भी मुसलमान एकेस्वरवादी है, और ईश्वर के स्थान पर किसी दूसरे की पूजा नहीं करते।

रोमन कैथोलिक ईसाई, ईमा, मरियम आदि की पूजा करते हैं किन्तु प्रोटेस्टैण्ट ईसाई उसे ईसाई धर्म के विरुद्ध समझते हैं। ईसा ने स्वयं मूर्तिपूजा का खण्डन किया है। कुछ योरूप-निवासियों में पुराने मूर्तिपूजा के मस्कार जीवित रहे और अन्य देवताओं के स्थान पर उन्होंने ईमा और उसकी माता मरियम की पूजा प्रचलित कर दी।

जब किसी मनुष्य या जानि के हृदय में प्रचल कुसंस्कार घर कर लेते हैं तो उन्हें निर्मूल करना कोई सरल बात नहीं है। किन्तु बुराई, बुराई ही है। पुरानी होने से उसके दोष गुणों में परिणत नहीं हो सकते। किसी रोग की भयङ्करता इसलिये कम नहीं हो जाती, क्योंकि उससे बहुत से मनुष्य पीड़ित हैं, ऐसा रोग तो महामारी है, और उसका शीघ्र से शीघ्र उन्मूलन होना चाहिए। योरूप, अमरीका आदि पाश्चात्य देशों में बड़े-बड़े नगरों के सार्वजनिक स्थानों में उनके महापुरुषों की जिस भांति मूर्तियाँ स्थापित की गई हैं, वही महापुरुषों की मूर्तियों की उपयुक्त पूजा है। हमारे देश में भी देश के नेताओं की इसी प्रकार की मूर्तियाँ स्थापित करने की प्रथा चल पड़ी है। किन्तु यह उसी अवस्था में लाभप्रद है जब हम उनका उचित उपयोग करें। यदि राम कृष्णादि महान पुरुषों की मूर्तियों की तरह इनका भी दुरुपयोग हुआ तो इससे भी हानि ही होगी। महात्मा गान्धी की मूर्ति और समाधि का कुछ ऐसा ही दुरुपयोग महात्मा जी की इच्छा और सिद्धान्तों के विरुद्ध उनके भक्तों द्वारा, जिनमें हमारे देश के बड़े-बड़े नेता भी हैं, प्रारम्भ हो चला है जिसे रोकने की बड़ी आवश्यकता है।

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

अक्षरों की कल्पना की आवश्यकता थी, और न लेखनकला की। परमात्मा सर्वव्यापक और सार्वकालिक है, अतः उसके लिए किसी दूसरी वस्तु की कल्पना का प्रश्न ही नहीं उठता। यदि कहो कि दिखाई नहीं पड़ता इसलिए कल्पना करने की आवश्यकता है। परन्तु केवल दिखाई न पड़ने से किसी वस्तु का अभाव नहीं हो जाता। आकाश और शब्द दोनों ही दिखाई नहीं पड़ते परन्तु उनका अभाव नहीं है। कल्पित वस्तु में और जिस वस्तु का वह कल्पना है कुछ सादृश्य होना चाहिये। अक्षर-विज्ञानवेत्ता जानते हैं कि साकार अक्षर निराकार अक्षरों की मूर्ति नहीं है अपितु उच्चारण के समय जो ओष्ठ आदि की आकृति बनती है उसकी ही कल्पना है और वर्तमान समस्त भाषाओं की वर्णमालाएँ उन्हीं का अपभ्रंश रूप हैं। इसी प्रकार एक बिन्दु उसी समय तक रेखागणित के बिन्दु के सदृश समझा जायगा जब वह सूक्ष्म से सूक्ष्म हो। एक बड़े गोलाकार चिह्न को कभी कोई बिन्दु कहने या मानने के लिये उद्यत नहीं होगा। एक हाथी के बह्दाकार की आप पहाड़ से उपमा दे सकते हैं किन्तु एक जलाशय में उसकी कल्पना नहीं की जा सकती, यद्यपि दोनों ही साकार हैं। ईश्वर और पापाण-मूर्ति में लेशमात्र भी सादृश्य नहीं है। मूर्तियाँ प्रायः निराकार ईश्वर की कल्पना करके बनाई भी नहीं गई, अपितु मनुष्यों को ईश्वरावतार समझ कर उनकी कल्पना कर डाली गई है। निराकार शब्द आँख से नहीं देखा जाता, अपितु कान से सुना जाता है। सुविधा के लिये कानों के विषय को साकार अक्षरों की कल्पना द्वारा आँखों का विषय बना लिया गया है। परन्तु जो परमात्मा किसी इन्द्रिय का विषय नहीं है उसे समझाने के लिये उसे किस इन्द्रिय का विषय बनाया जाये? वह तो केवल अनुभूति की ही वस्तु रह जाती है।

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमेलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमेलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

दूर नहीं होती हिन्दू-सङ्गठन एवं राष्ट्रान्त्रिक के स्वप्न देखना एक दुराशा-मात्र है । क्रान्ति चाहे वह राजनैतिक हो चाहे धार्मिक कभी सुख-साध्य नहीं हो सकती । उसमें कष्ट, विरोध, यातनाएँ सभी कुछ सहन करनी पड़ती हैं । परन्तु क्रान्ति जीवन का चिन्ह है इसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता । देश की स्वाधीनता के नाम पर धार्मिक एवं सामाजिक सुधारों की अवहेलना भी अदूरदर्शिता है । भारतवर्ष की पराधीनता का मूलकारण धार्मिक एवं सामाजिक था, राजनीतिक नहीं ।

राजनैतिक सुधार पहिले, धार्मिक और सामाजिक पीछे, यह प्रस्ताव जिन लोगों की ओर से रखा जाता है, हम उनसे पूछते हैं कि उन्होंने यह कैसे निश्चय कर लिया कि राजसत्ता जिन लोगों के हाथ में आती है वे सभी सुधारवादी होते हैं ? विधान-सभा का निर्वाचन जन-साधारण ही करते हैं जब तक वे स्वयं सुधरे हुए नहीं होंगे, सुधार-प्रिय प्रतिनिधियों का निर्वाचन असम्भव है । यह कार्य तो फिर भी उन ही को करना होगा जो इन सुधारों की आवश्यकताओं का अनुभव करते हैं । राजसभाएं भी ऐसे सुधारों में हाथ डालने से भयभीत रहती हैं जिन्हें जन-साधारण का समर्थन प्राप्त न हो । इतिहास इस बात का साक्षी है कि राजसत्ता हाथ में आने पर भी धार्मिक एवं सामाजिक कलहों के कारण हम उसे स्थिर नहीं रख सके ।

(२३)

“हिन्दूधर्म में बहुदेवतावाद नहीं है । प्रत्येक मन्दिर में यदि आप उपासक के निकट खड़े होकर उसकी स्तुति-प्रार्थना को सुनें तो आप पायेंगे कि वह परमात्मा के निराकार आदि सब ही विशेषणों का उस मूर्ति के लिये उपयोग करता है ।”

हम अनेक प्रमाण देकर सिद्ध कर चुके हैं कि हिन्दू धर्म का एक सम्प्रदाय अन्य के उपाम्यदेव की पूजा का न केवल निषेध

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । आंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

उपासना विधि

मूर्तिपूजा के अभाव में हमारी उपासना-विधि क्यों हो ? यह एक प्रश्न है, प्रायः जिसे या तो जटिल समझा जाता है या जटिल बनाकर सर्वे साधारण के सम्मुख उपस्थित किया जाता है । जैसा कि हमने इस पुस्तक में सिद्ध करने का प्रयत्न किया है । मूर्तिपूजा का आरम्भ महाभारत काल के पश्चात् हुआ है । और उसका हमारे प्राचीन वैदिक धर्म और संस्कृति से कोई सम्बन्ध नहीं है । जिस समय इस देश में मूर्तिपूजा का प्रचार नहीं था । उस समय जनसाधारण की एक सर्वाङ्गपूर्ण उपासना-विधि थी, इस विषय पर हमारे धर्मशास्त्र और इतिहास पर्याप्त प्रकाश डालते हैं । तब क्यों इस प्रश्न को इतना जटिल समझा जाता है । बात स्पष्ट है, मूर्तिपूजा के समर्थक इसकी आड़ में उसको जीवित रखना चाहते हैं । क्यों रखना चाहते हैं, इस विषय पर इस पुस्तक में पर्याप्त विचार किया जा चुका है ।

यद्यपि योगविधि का कोई भी ऐसा अङ्ग नहीं है जो जनसाधारण की पहुँच से परे हो, तथापि यह अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि जिस प्रकार प्रत्येक मनुष्य उच्चकोटि का वैज्ञानिक साहित्यकार एवं कलाकार नहीं बन सकता, उसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति योगी बनने की क्षमता नहीं रखता । यह सत्य है कि जो जितना परिश्रम करता है उसे उतना फल अवश्य प्राप्त होता है । परन्तु प्रत्येक जीव अपने पूर्व संस्कार तथा उस वातावरण में जिसमें कि उसका पालन-पोषण अथवा विकास हुआ है प्रभावित हुए बिना नहीं रहता । जीवन जन्म जन्मान्तर के संस्कार का पुच्छ है, इसे बिना समझे हम इस सासारिक विषमता को भली भाँति नहीं समझ सकते । अतः एक ऐसी उपासना विधि की जिसके द्वारा प्रत्येक मनुष्य अपनी भौतिक उन्नति के साथ आत्मविकास भी कर सके, आवश्यकता सदा

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमेलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अध्र

महात्म्य है। मन्त्र जाप भी चित्त की एकाग्रता का एक साधन है। अतः साधारण शिक्षित लोग उससे समुचित लाभ उठा सकते हैं।

प्रणव अथवा मन्त्र जाप में जिस बात की विशेष आवश्यकता है और जिसे दुर्भाग्यवश पौराणिक काल में सर्वथा भुला दिया गया था, वह 'अर्थ' विचार' है। एक हिन्दू समझता है कि बिना अर्थ-विचारे मन्त्र जाप मात्र से ही उसके पाप नष्ट हो जाते हैं, किन्तु जब तक हम मन्त्रार्थ नहीं जानते तब तक हम उससे पूर्ण लाभ नहीं उठा सकते और न उससे हमारे विचार ही प्रभावित हो सकते हैं। जप वा उद्देश्य विचारों की शुद्धता और मन की एकाग्रता है। यदि इससे इन दोनों उद्देश्यों की पूर्ति नहीं होती है तो उसका महत्व तोते की रट से अधिक नहीं। अतः जप के साथ अर्थ विचार अनिवार्य है।

प्रत्येक व्यक्ति को पञ्च यज्ञों के नित्य अनुष्ठान का आर्य-धर्म पद-पद पर उपदेश देता है। इन्हीं आह्निक कर्मों में एक ब्रह्म यज्ञ है। रुन्ध्या, जप, स्वाध्याय और प्रवचन ये सब ही ब्रह्म यज्ञ के अन्तर्गत हैं। अर्थात् सायं, प्रातः ईश्वरोपासना मन्त्र जाप, वेदादि सद्ग्रन्थों का नियम पूर्वक अध्ययन तथा जो कुछ स्वयं अध्ययन किया है उसे दूसरों पर प्रकट करना, ये प्रत्येक के लिये नित्य नैमित्तिक कर्म हैं। परन्तु हिन्दू समाज में जहाँ ईश्वरोपासना का स्थान मूर्तिपूजा ने ले लिया है, वहाँ स्वाध्याय का या तो सर्वथा अभाव हो गया या रामायण, भागवतादि इतिहास पुराणों ने ले लिया, और वेद शास्त्र, स्मृति आदि सद्ग्रन्थों का अध्ययन लुप्तप्राय हो गया। सर्वसाधारण का धर्मविषयक ज्ञान राम और कृष्ण की कथाओं से अधिक कुछ नहीं है। इसका एक अन्य कारण यह भी है कि पौराणिक काल में वेदाध्ययन का अधिकार केवल ब्राह्मणों तक ही

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमेलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । आंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

मात्र हैं। अश्वमेध, गोमेधादि यज्ञों का राष्ट्रिय-स्वरूप है। उस समय इस देश में अग्नि होत्र का इतना प्रचार और महत्व था कि प्रत्येक शुभ अवसर पर अग्नि होत्र से ही कार्य प्रारम्भ होता था। हमारे संस्कारों की यज्ञ प्रधानता आज भी हमें उस युग की याद दिलाती है। अग्निहोत्र द्वारा पञ्चदेव—आकाश, अग्नि, वायु, जल तथा पृथ्वी की शुद्धि और संस्कार होता है। यही इनकी पूजा है। और इसीलिये इसका नाम देव-यज्ञ अथवा देवपूजा है। जल-वायु की शुद्धि द्वारा अनायास ही अनेक संक्रामक रोगों से हमारी रक्षा होती है। यह निर्विवाद है कि अग्निहोत्र से हमारे मन और स्वास्थ्य पर एक अद्भुत प्रभाव पड़ता है जिसका अनुभव प्रत्येक व्यक्ति थोड़े से व्यय और परिश्रम से स्वयं कर सकता है।

आर्य जाति अपने धर्म और संस्कृति से आज बहुत दूर हट चुकी है, परन्तु अब भी उनके अकुर बीजरूप से उसमें विद्यमान हैं। आवश्यकता किञ्चित् नेतृत्व और पथप्रदर्शन की है। हजारों वर्षों से अनेक सम्प्रदायों द्वारा वह पथभ्रष्ट होती रही है। धर्म के नाम पर अनेक कुसंस्कार और दुर्व्यसन उसमें घर कर गये हैं। तथापि राख की ढेरी के नीचे दबी हुई चिंगारी की भाँति आज भी वैदिक भावनाएँ सर्वथा विलुप्त नहीं हुईं। यदि हिन्दू समाज के कर्णधार स्वार्थ से ऊपर उठ कर उस दैवी अग्नि को प्रज्वलित करना चाहे तो वह अब भी संसार को पुनः देदीप्यमान करने की क्षमता रखती है। इस जाति ने अनेक दुर्दिन देखे हैं किन्तु फिर भी उसका अपना प्राचीन गौरव सर्वथा विलुप्त नहीं हुआ। वह आज कङ्काल होने पर भी अनेक बहुमूल्य रत्नों की स्वामिनी है, और अब भी संसार को कुछ दे सकती है। क्या इसके लिये हम कुछ आत्मोसर्ग करेंगे।

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । आंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

मूर्तियाँ विदेशियों की देव मूर्तियाँ हैं, जिन्हें वे अपनी सभ्यता के साथ इस देश में लाए, भारतीय नहीं। शिव लिंग पूजा भी अभारतीय ही है। अफ्रीका के एक भाग में अब भी एक शिवालय है, जहाँ शिव-लिङ्ग स्थापित है। अरब देशों में इस्लाम से पूर्व शिव-लिङ्ग-पूजा प्रचलित थी।

आश्चर्य यह है कि मूर्ति-पूजा-समर्थक मूर्ति-पूजा की प्राचीनता सिद्ध करने की धुन में आर्यों का विदेशों से आगमन मानकर अपनी प्राचीन सभ्यता और संस्कृति पर कुटाराघात होना कैसे सहन कर लेते हैं? सिन्धु घाटी की सभ्यता पाँच हजार वर्ष पुरानी मानी जाती है, जो भारतीय धार्मिक इतिहास के अनुसार महाभारत काल के लगभग तक पहुँचती। तब क्या आर्य-संस्कृति का प्रादुर्भाव महाभारत के समय से ही माना जाय? तब क्या 'राम'—जिनकी मूर्ति को विष्णु अवतार मानकर पूजा की जाती है—अनर्थ थे? अथवा राम का समय महाभारत के पश्चात् माना जाय? दुःख है कि पाश्चात्य के इस मिथ्या प्रचार का कि हमारे आर्य-पूर्वज विदेशों आक्रमणकारी थे, यहाँ के मूल निवासी नहीं, अपने को विदेशी सिद्ध करने का हम भी अनुकरण करते हैं। हम आज भी नहीं समझ पा रहे हैं कि उनकी इस कुटिल चाल ने इस देश में क्या उत्पात खड़े कर दिए हैं, और कितना विपैला वातावरण उत्पन्न कर दिया है। भील, कोल, नागा आदि वन जातियाँ ही नहीं द्रैविड, एवं हिंदुओं की परिगणित जातियाँ भी अपने को यहाँ का मूल निवासी बताते हैं और यह जातियाँ ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य वर्ग को विदेशी आक्रमणकारी कह कर घृणा की दृष्टि से देखने लगे हैं। आवश्यकता इस बात की है कि अब भारतीय इतिहास के उन पृष्ठों को—जिनमें आर्यों को अभारतीय बताया गया है—फाड़ फेंका जाय, इसी में हमारा कल्याण है।

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । आंध्र

व्याख्या यास्काचार्य ने निरुक्त नैगम कांड ४।३।४५ में निम्न प्रकार की है —

—“मा शिश्न देवा ” —अ ब्रह्मचर्या, शिश्नमृश्नथते ।

अग्निगु ऋत न सत्यं वा यज्ञं वा ॥ अर्थात् कामीजन हमारे यज्ञ में न आये । शिश्न से क्रीड़ा करने वालों को ‘शिश्नदेव’ कहा गया है (निरुक्त प्रतीप पूर्वार्ध पृष्ठ २८२) ।

सायणाचार्य ने शिश्नदेव का अर्थ भी—‘अथच शिश्नदेवा. शिश्नेन दीव्यन्ति क्रीडन्त इति शिश्नदेवाः अब्रह्मचर्या इत्यर्थः । अर्थात् जो लोग लिंग से खेलते हैं वे अब्रह्मचारी हैं,—किया है ।

स वाज यातापटुष्पदा यन्त्स्वर्पाता परि पदत्स निष्यन् ।

अनर्वा यच्छतदुरस्य वेदो ब्रज्जिश्च शनदेवा अभिवर्षसा भूत ॥
(ऋग्वेद १०।६६।३)

इस पर भी सायणाचार्य ने “शिश्नदेवान् अब्रह्मचर्यान् शत्रु पुर सम्बन्धिषु वर्त्तमानान् घ्नन् हिंसन्”—अर्थात् लिंग जन्य कामनाओं को मारकर शान्ति लाभ करता है इत्यादि भाष्य किया है ।

उपयुक्त दोनों ही मन्त्रों में “शिश्नदेवा ” का अर्थ कामी एवं अब्रह्मचारी ही है । इससे लिंग पूजा किसी प्रकार सिद्ध नहीं है । अतएव इन विद्वानों की यह कल्पना कि वेदों में लिंग पूजा है सर्वथा भ्रान्त और निराधार है ।

अब उन मन्त्रों पर, जो प्राय मूर्ति-पूजा के पोषक पौराणिक विद्वानों द्वारा मूर्ति पूजा के पक्ष में प्रस्तुत किए जाते हैं, यहा क्रमशः संचेष में विचार करते हैं —

‘सहस्रस्य प्रमा असि सहस्रस्य प्रतिमा असि ।

सहस्रस्योन्मासि । सहस्रोऽसि सहस्राय त्वा ॥

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमेलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अध्र

इस मंत्र में नील ग्रीव शिव का वर्णन बताया जाता है परन्तु उव्वट इसकी टीका करते हुए लिखते हैं—

“नीलग्रीवाः द्युस्थाना उच्यन्ते” । अर्थात् नीलग्रीव द्यो स्थान में रहते हैं, ऐसा कहा जाता है ।

असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः ॥ उत्तैन गोपाऽअद्भ-
शन्नद्भश्नुदहार्यः सदृष्टो मृडयाति नः ॥ (यजु० १६ । ७ ।)

इस पर नीलग्रीव का अर्थ उव्वट ने निम्न प्रकार किया है—

अशौच आदित्यः अवसर्पति अर्वाचीनं सर्पति गच्छति अस्त
मय काले नीलग्रीवारतं गच्छन् लक्ष्यते ।

अर्थात् जब सूर्य पश्चिम दिशा में जाकर छिपता है तब नील
गर्दन वाला सा दिखाई पड़ता है, अतः नीलग्रीव है ।

उपर्युक्त दोनों मन्त्रों में अस्त होने वाले सूर्य को नीलग्रीव
कहा गया है ।

एषो ह देवः प्रदिशोऽनुसर्वाः पूर्वो ह जातः स उ गर्भे अन्तः ।

स एव जातः स जनिष्यमाणः प्रत्यङ्क्जनास्तिष्ठति विश्वतोमुखः

(यजु० २ । ३४ ।)

इस पर उव्वट का भाष्य—एष एव देव प्रदिशः दिशाश्चः
सर्वाश्चानु व्याप्य वर्तन्ते तिर्यगूर्ध्वमधश्चेति । पूर्वो हजातः अनादि
निधनः सम्भूतः स उ गर्भे अन्तः स एव च मातुरुदरे अन्तर्गर्भे
व्यवतिष्ठते स एव जातः स जनिष्यमाणः । तदुक्तं सर्वं खल्विदं
ब्रह्म तज्जलानिति शान्त उपासीतेति प्रतिपदार्थं मञ्जनः । हे जनाः
तिष्ठति सर्वतो मुखः सर्वतोऽक्षिशिरोग्रीव पाणिपादः तिष्ठति ।
अचिन्त्यशक्तिरित्यर्थः

अर्थात् यह देव—परमात्मा प्रदिशाओं और सारी दिशाओं
को व्याप्त करके स्थित है । तिरछे ऊपर नीचे भी । वह पूर्व जात

-अनादि निधन है। वही माता के गर्भ में भी व्यवस्थित — (व्यवस्था के साथ स्थित) है। वही जात पैदा और जनिष्यमाण (पैदा होने वाला) पदार्थ है। वहा भी है —

सब कुछ यह ब्रह्म ही है। उससे ही जीव पैदा होते हैं। उससे ही जीव भय को प्राप्त होते हैं। और उससे ही जीवित होते हैं। ऐमा जन शान्त हुआ प्रत्येक पदार्थ से उपासना करे।

हे लोगो ! वह सब ओर आँख, शिर, ग्रीवा और हाथ पैर वाला स्थित है। अर्थात् अचिन्त्य शक्ति है

इस मंत्र से ईश्वर का गर्भ में आना और अवतार लेना सर्वथा असिद्ध है। परमात्मा सर्व व्यापक होने से माता के गर्भ में भी स्थित है।

इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् ।

समूढमस्य पा ग्व सुरे स्वाहा ॥ (यजु० ५ । १५)

इस मन्त्र पर यास्काचार्य का भाष्य इस प्रकार है —
अथ यद्विपितो भवति तद्विष्णुर्भवति । विष्णुर्विशतेर्वा व्यश्नो-
तेर्वा । तस्यैषा भवति “इदं विष्णुर्विचक्रमे” यदिदं विश्वं तद्वि-
क्रमते विष्णुः त्रिधा निधत्ते पदं पृथि-ग्राम् अन्तरिक्षे दिवीति
शाकपूणिः, समारोहणे विष्णुपदे गयशिर सीत्यौर्णवाम् ।
समूढमस्य पासुरे ऽप्यायते अन्तरिक्षे पदं न दृश्यते, अपि वोपमार्थं
स्यात्, समूढमस्य पांसुल इव पदं न दृश्यते, इति

निरुक्तदैवत ॥१२॥ २॥ १२॥

अर्थात् जिस लिए किरणों से व्यापक होता है अतः विष्णु कहते हैं। किरणों से प्रविष्ट होता है, इस लिए भी विष्णु कहते हैं। सर्वत्र एशियाँ द्वारा प्रविष्ट होता है, इसलिए भी विष्णु कहते हैं।

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इसी अर्थ की दृष्टि से ब्राह्मण में मेघ के विषय में लिखा है कि उसने जल रूप आहार को ग्रहण किया है । विद्युत वराह नाम के ग्रथ में भी 'मेघ को भेदते हुए' यह अर्थ है, दूसरा वराह शब्द भी इसी लिए शूकर के अर्थ में प्रयुक्त होता है, क्योंकि वह अच्छी अच्छी जड़ों का आहार करता है । इस मंत्र में वराह अवतार किसी भी प्रकार सिद्ध नहीं होता ।

कृष्ण शब्द वेदों के अनेक मंत्रों में आया है । परन्तु उसका कृष्णावतार से दूर का भी सम्बन्ध नहीं है । इन मंत्रों में उसका प्रयोग प्रायः काला रंग, आकर्षक, काला बादल आदि अनेक अर्थों में हुआ है ऐसे कुछ मन्त्रांश यहाँ दिये जाते हैं :-

त्वे अग्ने सुमति कृष्ण वर्णं ॥ ऋ० १ । ७३।७ ॥ काला रंग ।

प्रत्यकी कृष्ण मध्व ॥ ऋ० १ । ६२ । ५ ॥ -काला रंग ।

प्रमन्दिने यः कृष्ण गर्भा निरहन् नृजिश्वना ॥ ऋ० १ । १०१ । १ ॥

यहाँ कृष्ण गर्भा के अर्थ पाप गर्भा के हैं ।

तन्मित्रस्य कृष्णमन्यद्धरित स भरन्ति ॥ ऋ० १ । ११५ । ५

अथर्व० ३०।१२३। २।२ । यजु० २३।३८।

कृष्ण कर्षक, आकर्षण करने वाला ।

अथ चक्रमि आकृष्ण ईजुः ॥ ऋ० ४ । १६ । १४ ॥

कृष्ण वर्णों मेघः ॥ (सायण) काला बादल ।

अहश्च कृष्णं हरर्जुनश्च ॥ ऋ० ६ । ६ । १ । यहाँ कृष्ण शब्द दिन का विशेषण है । जिसके अर्थ काले के हैं ।

प्रथ दश्वो वृजनं कृष्णमस्ति ॥ ऋ० ७ । ३ । २ ॥ य० १५।६२॥

अथै तस्य वृजनं कृष्णं भवतीति वृजति गच्छत्य तनेनेति ॥

वृजनं कृष्णं भवति । (उवट) ।

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

अर्थात् कीकट देश वह कहलाता है जहाँ पर गौएँ अपने दूध से कर्मकांड में आने वाले पात्र महावीर को नहीं तपाती ॥

तदेतद् देव मिथुनं यद् धर्मः ॥

(ऐतरेय ब्राह्मण, १।४।५। पृ० ६७॥)

इस पर सायणाचार्य जी—

‘सयोधर्मं प्रवर्ग्य हविराश्रय भूतो महीवीराख्यो मृन्मयपात्र विशेषो योऽसावस्ति छिन्न प्रजननेन्द्रियरूपम् ” ॥पृष्ठ ६७॥

अर्थात् वह यह धर्म है जो प्रवर्ग्य हवि का आश्रय भूत है । इसका नाम महावीर है — मिट्टी का पात्र है

महावीरं यज्ञ साधने मृन्मय-पात्र भेदे तन्निर्माण विधिः ।

(का० श्रौ० सू० २६ ॥वाचस्पत्यकोपस्तब् २० पृष्ठ ४७४४

अर्थात् महावीरं यज्ञ के साधन में मिट्टी का पात्र विशेष है ।

“यदि महावीरो भिद्येत०” (ताण्ड्य ब्राह्मण ६। १०।१।

॥पृष्ठ ६२३ ॥)

इस पर सायण जी—

“ यदि प्रव्रजन समये महावीरः ब्रुट्येत् प्रादेश मात्र मृन्मये तस्मिन् पात्रे बहुल घृतमानीय सन्तप्तं तस्मिन्नाव्येपयः आनीय प्रव्रज्यते स्वप्रवर्ग्य पात्र विशेष महावीर सपदि भिद्येत् भिन्नो भवेत् तद् भिन्नं महावीरं पक्षते ” ॥पृष्ठ ६२३ ॥

आशय—यदि कार्य करते समय महावीर पात्र टूट जाय ‘ब्रुट्येत्’ तो उस महावीर पात्र को घृत में दूध मिलाकर पकाते । आदि ०

प्रिफिथ साह्य ऋग्वेद की टीका करते समय पृष्ठ ४६२ पर लिखते हैं —

“Heated for Pravargya--In which fresh milk was poured into a heated vessel called ‘Mahavira,’ or as in this place Gharma.”

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमेलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । आंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

सोचते हैं कि ऐसा करने से जिसका यह चित्र है उसका अपमान होगा । मूर्ति पूजा में भी ऐसा ही है । कोई ईंट, पत्थर या काठ की पूजा नहीं करता, बल्कि अपने इष्ट देव के अनुकूल मूर्ति बनाकर पूजता है । उसी मूर्ति में वह अपने इष्टदेव की छाया देख पाते हैं, ईंट पत्थर को नहीं देखते । जो मूर्ति की पूजा करते हैं वे क्या कभी यह कहते हैं, “हे ईंट, हे पत्थर, हे काठ । मैं तुम्हारी पूजा करता हूँ, तुम मुझ पर दया करो ।” स्वामी जी का यह उत्तर सुनकर महाराजा साहब बोले, आपने मेरे हृदय के अन्व कार को दूर कर दिया, मेरी आखें खोल दीं ।”

—यहाँ स्वामी विवेकानन्द जैसे जगत् प्रसिद्ध विद्वान ने वाक्छल का आश्रय लिया है—प्रश्न कुछ है उत्तर कुछ और है । किसी के चित्र अथवा मूर्ति का जानबूझकर अपमान करना निश्चय ही उसका, जिसकी वह मूर्ति है, अपमान है । वैसे नित्य समाचार पत्रों में प्रकाशित चित्र रही में पढ़कर जाने, अनजाने सभी प्रकार के कार्यों में आते रहते हैं । परन्तु यहाँ प्रश्न मूर्ति पूजा का है, मूर्ति भंजन या उसे अपवित्र करने का नहीं है । किंतु जो परमात्मा निराकार और अमूर्त है उसका तो कोई चित्र या मूर्ति नहीं जिसे अपवित्र या अपमानित किया जा सके । यह ठीक है कि वह सर्वव्यापक होने से प्रत्येक वस्तु में व्याप्त है, परन्तु इससे वह वस्तु परमात्मा तो नहीं हो जाती । यदि ऐसा मान लिया जाय तो ईंट, पत्थर, पृथिवी, जिन्हें हम नित्य मल-मूत्र से अपवित्र करते रहते हैं, क्या उससे परमात्मा अपवित्र हो जाता है ? प्रश्न सीधा यह है कि क्या यह मूर्तियाँ, जिनकी लोग पूजा करते हैं क्या परमात्मा की हैं ? यदि नहीं तो वह ईश्वर-पूजा कैसे हुई । जिस जिसकी वह मूर्ति है उसकी पूजा तो एक क्षण को आप कह सकते हैं, परन्तु ईश्वर की नहीं । परन्तु किसी महापुरुष की पूजा उसकी शिक्षा और उपदेशों का अनुकरण हो सकता है । उसे

इन सबके चारों ओर तावे का सुनहला आमलक फल है । इसके निकट ही महाबोधि संघाराम का विशाल भवन है । जिसे लंका के राजा ने बनवाया है । उसकी ६ दीवारें तथा तीन खंड ऊंचे युर्ज हैं । इसके चारों ओर ३०-४० फीट ऊंचे परिकोट हैं । इसमें शिल्प की बहुत भारी कला खर्च की गई है । बुद्ध की सोने चांदी की मूर्तियाँ हैं और उनमें रत्न जड़े हैं । वर्षा ऋतु में यहाँ बौद्धों का बहुत भारी मेला लगता है, लाखों मनुष्य आते हैं और दिन रात उत्सव मनाते हैं ।”

यह नालंद विश्व विद्यालय में कामरूप के राजा के साथ कुछ दिन रहा था । यहाँ इसने बड़े बड़े विद्वानों से बात चीत की थी । मुंगेर, पूर्वी बिहार तथा उत्तरी बंगाल में बौद्धों के संघाराम और हिन्दुओं के देव मन्दिर दोनों ही समान रूप से विद्यमान थे । यहां से चलकर वह आसाम, मनीपुर, सिलहट आदि पहुँचा जहाँ बहुत से हिन्दू मन्दिर निर्माण हो चुके थे और बौद्धों का बहुत कुछ ह्रास हो चुका था । यहाँ उसने एक भी संघाराम नहीं देखा ।

वर्तमान मिटनापुर के निकट ताम्रलिप्ति राज्य में उसने जहाँ तहाँ संघाराम देखे । कर्ण सुवर्ण (मुर्शिदाबाद) में उसने बौद्ध और हिन्दू दोनों ही पाये । उड़ीसा में उसने १०० संघाराम और १० हजार भिक्षु देखे थे । पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ का मन्दिर उस समय तक नहीं बना था । परन्तु हिन्दुओं के दस मन्दिर वहाँ बन गये थे । बौद्ध इस स्थान को अपनी रक्षा का एक मात्र स्थान समझते थे । पुरी में आज भी बौद्धों के ढंग पर जगन्नाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है । कर्लिंग राज्य में बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं था परन्तु वरार में हिंदू, बौद्ध दोनों ही समान थे । यहीं पर प्रसिद्ध सिद्ध नागार्जुन रहता था । अंध्र

प्रकाशक :

श्रीमद् दर्शनानन्द ग्रन्थागार

कृष्णगङ्गा, मथुरा

मुद्रक :

गीता आश्रम प्रिंटिङ्ग प्रेस,

गऊघाट, मथुरा ।

प्रकाशक :

श्रीमद् दर्शनानन्द ग्रन्थागारं

कृष्णगङ्गा, मथुरा

मुद्रक :

गीता आश्रम प्रिंटिङ्ग प्रेस,

गऊघाट, मथुरा ।

प्रकाशक :

श्रीमद् दर्शनानन्द ग्रन्थागारं

कृष्णगङ्गा, मथुरा

मुद्रक :

गीता आश्रम प्रिंटिङ्ग प्रेस,

गऊघाट, मथुरा ।

प्रकाशक :

श्रीमद् दर्शनानन्द ग्रन्थागारं

कृष्णगङ्गा, मथुरा

मुद्रक :

गीता आश्रम प्रिंटिङ्ग प्रेस,

गऊघाट, मथुरा ।